जनवरी 2016

कोलकाता की मलिन बस्तियों में प्रवासनः श्रम बाजार परिणाम के जांच प्रवासी

कार्यकारी पत्र

श्रमिक (स्ट्रेंग्थन एंड हर्मोनाइज रिसर्च एंड एक्शन ओन माइग्रेशन इन इंडियन कॉन्टेक्स्ट) पोर्टल के तहत राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान

अर्पिता बेनर्जी

अभिस्वीकृति

मैं श्रमिक को हार्दिक रूप से आभार व्यक्त करना चाहूंगा हूँ (भारतीय संदर्भ में प्रवास पर अनुसंधान और कार्रवाई को मजबूत और अनुरूप बनाना) - इस अध्ययन के समर्थन के लिए सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट और एलाइड ट्रस्ट द्वारा एक पहल।

सार

प्रवासन मानव अस्तित्व का एक अभिन्न हिस्सा है जहां लोग राजनीतिक रूप से अच्छी तरह से परिभाषित क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाते हैं। आंदोलन अस्थायी/संचार से अपेक्षाकृत स्थायी प्रकृति में भिन्न है और दो स्थानों के बीच निवास में परिवर्तन शामिल हो सकते हैं। हालांकि, यह समझाने के लिए लोग प्रभावी बने रहने के लिए 'पुश-पुल' प्रतिमान की ओर जाते हैं, कई प्रस्ताव आगे रखे गए हैं। यही कारण है कि पलायन मुख्य रूप से किसान आधारित/आर्थिक रूप से उदास क्षेत्रों से औद्योगिक/विकसित क्षेत्रों में या परिधीय से प्रमुख क्षेत्रों के लिए है।

लोगों के स्थानिक गतिशीलता के बारे में कई कारणों का हवाला देते हुए अध्ययन बताते हैं कि गंतव्य में रोजगार के अवसर, अधिक मजदूरी, बेहतर ढांचागत प्रचलित स्थिति, विशेष रूप से शहर प्रेरित प्रवास होते हैं। शहरों में पलायन करने पर, ग्रामीण/शहरी गरीब प्रवासी शहरी मलिन बस्तियों जगह पाते हैं जो कम लागत का रहन-सहन और काम करने की व्यवस्था प्रदान करते हैं।

कोलकाता की मलिन बस्तियों में प्राथमिक सर्वेक्षण के आधार पर, वर्तमान अध्ययन से पता चलता है कि गरीब प्रवासी मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल और बिहार के आर्थिक रूप से कमजोर क्षेत्रों से आते हैं। प्रवासी मुख्य रूप से समाज के निचले तबके के होते हैं और मुख्यतः अनपढ़ या अनौपचारिक रूप से शिक्षित होते हैं। हालांकि, इन लोगों को साल का प्रमुख हिस्से के लिए कार्य मिलते हैं, उनमें से अधिकांश लोग संख्या स्वरोजगार में होते हैं। जहां कहीं भी, वे नियमित वेतनभोगी नौकरियों में हैं, प्रवासी छोटे विनिर्माण, कारखाने के कर्मचारी, खुदरा व्यापार, होटल और रेस्तरां, परिवहन क्षेत्र और घरेलू नौकरानी होते हैं, उनमें से सभी अल्प गतिशील कार्य में लगे हुए हैं। इसके अतिरिक्त, काम के घंटे भी बहुत लंबे होते हैं - एक दिन में 8 से लेकर 16-17 घंटे तक। श्रमिक विभिन्न श्रम बाजार के मुद्दों से ग्रस्त हैं जैसे नौकरियों की असुरक्षा, मजदूरी का देर से और गैर-भुगतान, काम उपलब्धता में रूकावट, नौकरी अनुबंध और सामाजिक सुरक्षा का अभाव। इसके अतिरिक्त, टुकड़े में भुगतान मिलने से नियोक्ताओं को अधिक से अधिक लचीलापन मिलतें हैं। उनके आवास की स्थिति है, जहां वे प्रवास करते हैं और काम करते हैं, उनकी स्थिति भी समान रूप से दयनीय है।

इसके अलावा, शहरी श्रम बाजार में लगे होने से गरीब पुरुष प्रवासी कृषि और मनरेगा के काम के लिए अपने पैतृक स्थानों की भी यात्रा करते रहते हैं। इस तरह के साक्ष्य प्रवासियों के भूमि की दिशा के साथ ही वित्तीय संकट को कम करने के लिए आय के विविधीकरण की ओर संकेत करते हैं।

इस पत्र से पता चलता है कि गरीब प्रवासी ज्यादातर शहर की अर्थव्यवस्था के अनौपचारिक क्षेत्र में रोजगार पाते हैं। फिर भी, वे सुरक्षा गार्ड, घरेलू नौकरों, ड्राइवरों के मामले में शहर में रहने वाले लोगों के लिए महत्वपूर्ण कार्यों को निभाते हैं जिसे छोड़कर किसी शहर के जीवन की कल्पना करना मुश्किल है।

प्रस्तावना

भारत की जनसंख्या को दुनिया की कम से कम मोबाइल आबादी में से एक के रूप में माना गया है। यूरोपीय और उत्तरी अमेरिकी देशों (खुल्लर 2000) की तुलना में भारत का प्रवासन दर बहुत ही कम है। इस घटना को ऐतिहासिक दृष्टि से स्थापित किया गया है। डेविस (1951) के अनुसार, जिसने 1931 की जनगणना से जन्म-स्थान के आँकड़ों का विश्लेषण किया, संयुक्त राज्य अमेरिका में, मूल निवासी जनसंख्या का 23 प्रतिशत भाग राज्य के बाहर रहते है जहां उनका जन्म हुआ था, जबकि भारत के मामले में यह आंकड़ा लगभग 4 प्रतिशत पर पहुंच गया है। जनगणना के अनुसार, लगभग 90 प्रतिशत लोगों को जिला में प्रगणित थे जहां उनका जन्म हुआ था और लगभग 7 प्रतिशत लोग पड़ोसी जिलों में पैदा हुए थे। इसे 1902 और 1931 के बीच भारत में अंतरराज्यीय पलायन के अपने अध्ययन के दौरान जकारिया (1964) द्वारा समर्थित किया गया था। हालांकि, पहले के दशकों की तुलना में अधिक, भारत में 1971[1] से ही प्रवास दर लगभग स्थिर बनी हुई है। वर्तमान में, भारत में पलायन दर 30.7 प्रतिशत (जनगणना 2001)। हालांकि, 2011 के लिए प्रवास पर ताजा आंकड़ों को अभी तक प्रकाशित नहीं किया गया है।

पीपुल्स मूवमेंट के विवरण के सतत रिकॉर्डिंग के अभाव में, भारत की जनगणना से अंदर और बाहर पलायन के अनुमान के बारे में राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (एनएसएसओ) द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों से पर्याप्त अंतर्दृष्टि हासिल किए जा सकते हैं। एनएसएसओ द्वारा भारत में प्रवासन डेटा को पहले 9वें दौर (1955) में एकत्र किया गया था। 9$^{वे}$ और बाद के दौर (11$^{वें}$ दौर, 1956 और 12$^{वें}$ दौर, 1957) सहित पलायन के ब्यौरे केवल श्रम शक्ति की आबादी के लिए एकत्र किए गए थे। 13$^{वें}$ दौर (1957-1958) में प्रवास के बारे में बाद में अधिक विस्तृत जानकारी एकत्र किए गए थे। 18$^{वें}$ दौर (1963-1964) में, आंतरिक प्रवास पर जनगणना के आंकड़ों के लिए तुलनीय अनुमान प्रदान करने के लिए एक बहुत बड़े पैमाने पर आंतरिक प्रवास पर सर्वेक्षण आयोजित किया गया। जन्म, मृत्यु और विकलांगता पर 28$^{वें}$ दौर (1973-1974) के सर्वेक्षण में नमूना परिवारों के सामान्य सदस्यों के प्रवास के ब्यौरे भी एकत्र किए गए थे। पलायन डेटा के संग्रह को 38$^{वें}$ दौर (1983), 43$^{वें}$ दौर (1987-1988) और 55$^{वें}$ दौर (1999-2000) पर रोजगार और बेरोजगारी के संबंध में पर नियमित रूप से पाँच वर्ष के सर्वेक्षण को एकीकृत किया गया। 49$^{वें}$ दौर के दौरान, प्रवास ब्यौरे को भारत के आवास की स्थिति के

[1] भारत की जनगणना के अनुसार, 1971 में पलायन दर 30.6 प्रतिशत था, जो 1981 में मामूली वृद्धि के साथ 31.2 प्रतिशत हो गया, उसके बाद 1991 में घट कर 27.7 प्रतिशत हो गया और फिर 2001 में बढ़ कर 30.7 प्रतिशत हो गया।

साथ एकत्र किया जाता है। भारत में प्रवास पर 64वां दौर (2007-2008) का ताजा आंकड़ा है जिसमें प्रवासियों के रोजगार और बेरोजगारी विशेषताओं के साथ-साथ प्रवास के ब्यौरे पर प्रकाश डाला गया है।

एनएसएसओ के अनुसार, नमूना परिवार के एक सदस्य को प्रवासी के रूप में माना जाता है, यदि वह अपने गृह नगर के अलावा किसी अन्य जगह पर (गांव/शहर) कम से कम छह महीने या उससे अधिक समय तक लगातार रहा हो। गांव/शहर जहाँ किसी व्यक्ति ने कम से कम छह महीने या इससे अधिक समय तक लगातार रहा हो या गणना (गांव/शहर) की जगह पर जाने के लिए 'निवास के अंतिम प्रायः जगह' के लिए संदर्भित हो। एनएसएसओ के अनुसार, भारत में पलायन दर 28.5 प्रतिशत (2007-08) है, एक अनुमान जो भारत की जनगणना की तुलना में कुछ कम है।

इसके अतिरिक्त, एनएसएसओ के नवीनतम उपलब्ध दौर (64वें दौर, 2007-08) में लघु अवधि के प्रवासियों पर सूचना प्रदान किया गया है। लघु अवधि के प्रवासी वे हैं जो रोजगार के प्रयोजनों के लिए एक महीने या अधिक, लेकिन कम से कम छह महीने की अवधि के लिए गांव/शहर से दूर रहा हो।

हालांकि, प्रवास के मार्गदर्शन के कई कारक हैं, 'पुश-पुल' प्रतिमान प्रमुख बना हुआ है। बेरोजगारी, काम करने के अवसर की कमी, गरीबी, कम वेतन और काम करने के अवसर जैसे गंतव्य के पुल, अधिक वेतन, बेहतर नागरिक सुविधाएं आदि जैसे पलायन के मूल कारक हैं (यांग 1979, श्रीधर और रेड्डी 2011)। उल्लेखनीय है कि, विशेष रूप से पुरुषों के लिए पलायन के प्रमुख कारण रोजगार के प्रयोजन है। वे बेहतर जीवन के मुख्य उद्देश्य के साथ पास और दूर के स्थान दोनों जगह छोटी और लंबी अवधि के लिए जाते हैं। हालांकि, प्रवासी को काफी बेचैनी और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जो इस तरह के पलायन से मिलते हैं, वे विदेशी स्थानों में जोखिम लेने के लिए तैयार होते है ताकि वे अपने परिवारों के लिए आजीविका का अर्जन कर सकें।

गरीब प्रवासी नियमित रूप से रोजगार प्राप्त नहीं करते हैं, वे कभी कार्यरत होते है तो कभी बेरोजगार होते हैं और वे खुदरा क्षेत्र में या निम्न विनिर्माण क्षेत्र में अल्प अस्तित्व प्राप्त कर लेते हैं। संक्षेप में, प्रवासी ज्यादातर शहरी अर्थव्यवस्था के अनौपचारिक क्षेत्र में अवशोषित होते हैं। गरीब सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के प्रवासी के पास औपचारिक कम शिक्षा होता है। इसके अलावा, जाति/वर्ग ओवरलैप के कारण, वे श्रमिकों के साथ ही प्रवासियों दोनों के रूप में अधिक जोखिम में रहते हैं (पेपानेक 1985; श्रीवास्तव और शशिकुमार 2003)। फिर भी, उचित रोजगार की कमी, ग्रामीण क्षेत्रों में गैर कृषि रोजगार की कमी, कम और अपर्याप्त मजदूरी, कम भूमि धारण, अपने जीवन की स्थिति को बदलने की इच्छा ने उन्हें शहरी क्षेत्रों की ओर प्रेरित किया है (लिंगम 1998ए; सिंह 2007)

कई अनपढ़ प्रवासी शहरी मलिन बस्तियों के भीड़ में शामिल होने के लिए मजबूर हो जाते हैं और वहाँ कम ग्रेड के श्रमिकों के रूप में (मुखर्जी 2001) रहते हैं। चूंकि, प्रवासी रोजगार कारणों के लिए शहर में प्रवेश करते हैं; इसलिए वे किसी छोटी अवधि के लिए भी बेरोजगार शेष की विलासिता का वहन नहीं कर सकते। प्रायः अक्सर नहीं, वे शायद मजदूरी से बेखबर रहते हुए नौकरियां प्राप्त करते हैं और यह मुख्य रूप से अनौपचारिक क्षेत्र (दुरियासैमी और नरसिम्हन 1997) से आता है। इस प्रकार, अधिकांश पुरुषों और महिलाएं अर्थव्यवस्था के अनौपचारिक क्षेत्र में जमा होते हैं जहां मजदूरी कम होते हैं, प्रतियोगिता गंभीर और असुरक्षा की भावना पहले से हावी होती है। यदि वे घरेलू उत्पादन में लगे हुए हैं, तो उपकरणों बहुत मामूली इस्तेमाल होता है और बहुत कम श्रमिक रोजगार में होते हैं। इस प्रकार, ये स्तर स्पष्ट रूप से कम कौशल तीव्रता और विभिन्न गतिविधियों के सीमाओं के संकेत देते हैं।

अनौपचारिक क्षेत्र के भीतर, प्रवासी, विशेष रूप से महिलाएं विभिन्न प्रकार के निर्माण गतिविधियों में लगी हैं जिसमें कम कौशल की आवश्यकता होती है, छोटे व्यापार, निर्माण गतिविधियों और अन्य सेवाएं जैसे, घरेलू नौकर, मैला ढोने वालों आदि में लगे होते हैं। हालांकि, इन प्रवासियों द्वारा इस तरह के कार्यों के शहरी मांग में एक बड़ी खाई को भरते हैं, वे आय सृजन (प्रेमी 1980) में अपने योगदान की दिशा में देश के समग्र अर्थव्यवस्था में मामूली बने रहते हैं। वे न केवल कम आय के साथ अर्थव्यवस्था के अनौपचारिक क्षेत्र में केंद्रित रहते हैं, बल्कि उनके द्वारा मानसिक और यौन उत्पीड़न सहित काम की लंबी अवधि के साथ कार्य करने की कमजोर स्थिति के साथ गंभीर स्थितियों का सामना किया जाता है। वे कम ग्रेड और दोहराव कार्य के लिए सस्ते और विनम्र श्रम के स्रोत हैं और इस तरह बड़े पैमाने पर नियोक्ताओं द्वारा पसंद किए जाते हैं (श्रीवास्तव 1998; घोष 2002; ओइसी 2002)।

इस संदर्भ में, वर्तमान कार्य कोलकाता की मलिन बस्तियों में रहने वाले गरीब प्रवासियों पर कुछ प्रकाश डालते हैं। इन प्रवासियों में दोनों लंबी अवधि के प्रवासी शामिल हैं जो लघु अवधि के प्रवासियों के साथ ही लगभग शहर में बसे चुके हैं, विशेष रूप से पुरुष जो शहर में अकेले चले गए और गांव और शहर के बीच संचार आवाजाही को बनाए रखते हैं। अध्ययन में प्रवासियों के मूल, शहर में उनके आने के कारणों का पता लगाने का प्रयत्न किया गया है और उनके श्रम बाजार मुद्दों की जांच और परिणाम जैसे काम की भागीदारी दर, कार्य की स्थिति, काम के घंटे, मजदूरों की व्यावसायिक गतिशीलता और उनके वर्ग/जाति अवरोध आदि का गहराई पता लगाया गया है।

प्रवासियों के जीवन प्रक्षेपवक्र का ब्यौरा देने से पहले, इस पत्र में शहरी भारत, पश्चिम बंगाल और कोलकाता के व्यापक संदर्भ में प्रवास के प्रवृत्तियों और पैटर्न की चर्चा की गई है। अध्ययन में प्रवासियों के श्रम बाजार भागीदारी और उसके परिणामों पर कुछ प्रकाश डाला गया है।

तदनुसार, इस पत्र को तीन वर्गों में बांटा गया है। प्रस्तावना के बाद, इस पत्र के प्रथम खंड में शहरी भारत, पश्चिम बंगाल और कोलकाता में प्रवास के प्रवृत्तियों और पैटर्न पर कार्य किया गया है। इसके अलावा, इस खंड में तीन अलग-अलग संदर्भों में प्रवासियों के श्रम बाजार भागीदारी पर भी ध्यान दिया गया है और प्रवासियों को आजीविका के अवसर उपलब्ध कराने में एक मेगा सिटी का अंतर प्रभाव का विश्लेषण करने की कोशिश की गई है। दूसरे खंड में विभिन्न साहित्य से स्लम विकास और कोलकाता के गरीब प्रवासियों के भीड़ के बीच के जटिल संबंधों पर प्रकाश डाला गया है। इसके अलावा, इस खंड में कोलकाता के प्रवासी स्लम वासियों पर ध्यान केंद्रित किया गया है (प्राथमिक सर्वेक्षण के आधार पर) और गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों दृष्टि से उनके श्रम बाजार परिणामों पर चर्चाकी गई है। इस अंतिम खंड में अध्ययन का निष्कर्ष शामिल है।

I. पश्चिम बंगाल तथा कोलकाता, भारत में प्रवासन के पैटर्न और रुझान

किसी विशेष क्षेत्र में शहरीकरण और प्रवास निकटता से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। शहरीकरण की प्रक्रिया में प्रवास का योगदान गतिशीलता की प्रकृति और पैटर्न (भगत और मोहंती 2009) पर निर्भर करता है। 2011 की जनगणना के अनुसार, शहरी क्षेत्रों में रहने वाले जनसंख्या का प्रतिशत बढ़ कर वर्ष 2001 से 2011 तक 28 से 31 प्रतिशत हो गया है। शहरीकरण की प्रक्रिया (1991-2001) में निवल ग्रामीण-शहरी प्रवास के योगदान का आकलन करते समय, कुंडू (2003)[2] में इसके अनुपात का अनुमान 21 प्रतिशत किया जाना है। हाल ही में, भगत और मोहंती (2009), 2001 की जनगणना से वास्तविक प्रवास डेटा का उपयोग करते हुए और अंतर-गणनात्मक प्रवासी आबादी के प्राकृतिक वृद्धि का समायोजन करते हुए एक ही निष्कर्ष निकाला गया है। हालांकि, उनके अनुसार, अगर शहरी आबादी में अवर्गीकृत डिसेनियल प्रवासी आबादी को ग्रामीण-शहरी प्रवासियों के रूप में वर्गीकृत किया जाता है तो पलायन का योगदान बढ़ कर 22 प्रतिशत तक हो जाएगा। 2011 के हाल के आंकड़ों की ओर ध्यान देते हुए, भगत (2011) ने प्राकृतिक वृद्धि, निवल ग्रामीण और शहरी वर्गीकरण और ग्रामीण-शहरी पलायन में शहरीकरण के घटक पर कार्य किया है। उन्होंने दर्शाया है कि शहरी आबादी के प्राकृतिक

[2] कुंडु (2003) ने पहले ही मौजूदा शहरों के विकास और कस्बों के उनके साथ विलय के कारण प्राकृतिक वृद्धि, (निवल) नए शहरों की आबादी, वृद्धि के साथ-साथ, निवल ग्रामीण-शहरी आबादी के योगदान का अनुमान लगाया है।

वृद्धि के घटक 1981-1991 से 2001-2011 तक 62 से घट कर 44 प्रतिशत तक हो गया है; इस प्रकार, शहरी आबादी में पर्याप्त वृद्धि (भगत 2011) ग्रामीण शहरी (पुन:) वर्गीकरण और निवल ग्रामीण-शहरी पलायन की वजह से हो रहा है। हालांकि, कुंडू (2011ख) ने मुख्य रूप से ग्रामीण शहरी प्रवास के बजाय नए शहरों की बड़ी वृद्धि को शहरी जनसंख्या में इस वृद्धि का श्रेय दिया है।

2011 की जनगणना से हाल के पलायन डेटा के अभाव में इस संबंध में कोई स्पष्ट विवरण का निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है। इस प्रकार, वर्तमान अध्ययन राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन, 2007-08 के नवीनतम दौर के डेटा निष्कर्षों पर आधारित है। जनगणना के आंकड़े के बिल्कुल विपरीत, जहां साल भर में शहरी पलायन दर बदलता रहता है, एनएसएसओ के आंकड़ों से 1993[3] के बाद से पूरे भारत में एक स्थिर वृद्धि का सुझाव मिलता है। दिलचस्प बात यह है कि, शहरी पश्चिम बंगाल में जहां प्रारंभिक वर्ष में भारत की तुलना में पलायन दर अधिक था, 2007-08 में गिरावट दर्शाता है, वही यह आंकड़ा शहरी भारत की तुलना में कम है। कोलकाता[4] शहरी पश्चिम बंगाल और भारत की तुलना में कम पलायन दर दर्शाता है। अध्ययनों से पता चला है कि राज्य के अन्य शहरी केंद्रों जैसे आसनसोल, दुर्गापुर और सिलीगुड़ी के विकास में स्थानीय कार्यकर्ताओं के बड़े हिस्से अवशोषित होते हैं। इसके अलावा, राज्य में देश के दिल्ली और मुंबई जैसे अन्य बड़े शहरों के विकास के साथ कोलकाता के गिरावट रुझान से कम अंतर-राज्य शहरी प्रवासी प्राप्त होते हैं। (रॉय 1994, कुंडू और गुप्ता 2000) (तालिका 1)।

तालिका 1: पश्चिम बंगाल और कोलकाता, भारत में शहरी प्रवास दर

	शहरी भारत			शहरी पश्चिम बंगाल			कोलकाता		
एनएसएस दौरा	पुरूष	महिला	व्यक्ति	पुरूष	महिला	व्यक्ति	पुरूष	महिला	व्यक्ति
1993 (जनवरी-जून)	23.9	38.2	30.7	28.2	40.7	34.0	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं
1999-00 (जुलाई-जून)	25.7	41.8	33.4	28.5	47.0	37.4	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं
2007-08 (जुलाई-जून)	25.9	45.6	35.4	23.3	48.2	35.3	26.1	36.6	30.9

स्रोतः राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन, भारत में प्रवासन, विभिन्न वर्ष

[3] भारत की जनगणना के अनुसार, 1971 में शहरों की ओर पलायन दर 40.0 प्रतिशत था, जो 1981 और 1991 में घट कर क्रमश: 38.8 और 32.3 प्रतिशत हो गया और फिर 2001 में 41.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

[4] कोलकाता पर विचार करते समय, सम्पूर्ण जिला जो पूरी तरह से शहरी क्षेत्र है, को ध्यान में रखा गया। 1993 और 1999-00 के लिए कोलकाता के लिए अलग से कोई जिला-वार डेटा उपलब्ध नहीं है।

आर्थिक अवसरों के उपयोग के संदर्भ में प्रवासियों के लिए पश्चिम बंगाल के गिरावट आकर्षण पर भी ध्यान दिया गया है। यही कारण है कि भारत में (2007-08), जहां शहरी प्रवासियों का 22 प्रतिशत भाग रोजगार के प्रयोजनों के लिए बाहर जाते हैं, पश्चिम बंगाल में यह आंकड़ा घट कर 18 प्रतिशत हो गया है। अधिक स्पष्ट रूप से, शहरी भारत में रोजगार के प्रयोजनों के लिए 56 प्रतिशत पुरुष बाहर चले जाते हैं इसके विपरीत पश्चिम बंगाल में केवल 48 प्रतिशत लोग ही बाहर जाते हैं। यही कारण है कि पुरुष प्रवासियों की कम संख्या आजीविका के लिए पश्चिम बंगाल को एक विकल्प के रूप में चुनते हैं। कोलकाता के आंकड़े पूरी तरह अलग तस्वीर दर्शाते हैं। प्रवासियों के लिए आजीविका के अवसर उपलब्ध कराने में शहर द्वारा की पेशकश किए गए आर्थिक स्पेक्ट्रम के व्यापक रेंज का सुझाव देते हुए कुल प्रवासियों का लगभग 49 प्रतिशत लोग काम प्रयोजनों के लिए बाहर जाते है और पुरुषों के लिए यह आंकड़ा 69 प्रतिशत है। इसी तरह, कोलकाता (44.5 प्रतिशत) में प्रवासियों के काम की भागीदारी का दर पश्चिम बंगाल (34.7 प्रतिशत) और भारत (37.3 प्रतिशत) की तुलना में बहुत अधिक है।

निष्कर्ष में आगे सुझाव दिया गया है कि शहर न केवल अपने प्रवासियों के लिए अधिक से अधिक रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं, बल्कि सुरक्षित नौकरियों का भी आश्वासन देते हैं। यह कहा जा सकता है कि प्रवासियों के बीच नियमित वेतनभोगी मजदूरी श्रमिकों की हिस्सेदारी शहरी भारत और पश्चिम बंगाल की तुलना में कोलकाता में सबसे ज्यादा है। कोलकाता के महिलाओं के प्रवासियों के बीच नियमित वेतनभोगी कर्मचारियों के उच्चतम शेयर का उल्लेख किया गया है जिसके लिए इन महिलाओं श्रमिकों के रोजगार के रास्ते खोजने के लिए डेटा का पता लगाने की आवश्यकता है। (चित्र 1)।

कोलकाता में कार्य की भागीदारी दर और नियमित वेतनभोगी नौकरियों में नियुक्ति स्पष्ट हो जाता है जब हम प्रवासियों के शैक्षिक योग्यता की ओर ध्यान देते हैं। समग्र रूप से शहरी क्षेत्र में और विशेष रूप शहरों द्वारा अनपढ़ या कम पढ़े-लिखे प्रवासियों को निम्न कार्य प्रोस्पेक्टस प्रदान किए जाते हैं। उदाहरण के लिए, कोलकाता में केवल 17 प्रतिशत की तुलना में शहरी भारत और पश्चिम बंगाल में प्रवासी कामगारों के लगभग 19 और 22 प्रतिशत लोग अनपढ़ हैं। इसके अलावा, भारत और पश्चिम बंगाल में एक चौथाई से अधिक और प्रवासी मजदूरों में से एक-तिहाई से थोड़े कम लोगों के पास मध्यम स्तर तक शैक्षिक योग्यता है। ऐसी हालत कोलकाता जैसे बड़े शहरों में बढ़ गई है जहां अधिक कौशल और शिक्षा की आवश्यकता है। यह कहा जा सकता है कि कोलकाता में बड़े अनुपात में प्रवासी

मजदूरों के पास भारत और पश्चिम बंगाल की तुलना में मध्यम मानक (38 प्रतिशत) तक शिक्षा प्राप्ति है।

इसके अलावा, शैक्षिक और कौशल सिद्धियों के निम्न स्तर को देखते हुए, शहर में निरक्षर महिलाओं प्रवासियों के लिए श्रम बाजार में प्रवेश करना विशेष रूप से कठिन है। इस प्रकार, कोलकाता में केवल 12 प्रतिशत महिला श्रमिक अनपढ़ हैं। इसके विपरीत, कोलकाता में एक तिहाई से अधिक महिला श्रमिक स्नातक और इससे ऊपर हैं और जो आगे नियमित वेतनभोगी नौकरियों में उनकी बड़ी उपस्थिति (राजू 2010) (तालिका क1) को बढ़ाता है।

चित्र 1: प्रवासी श्रमिकों की कार्य स्थिति, 2007-08

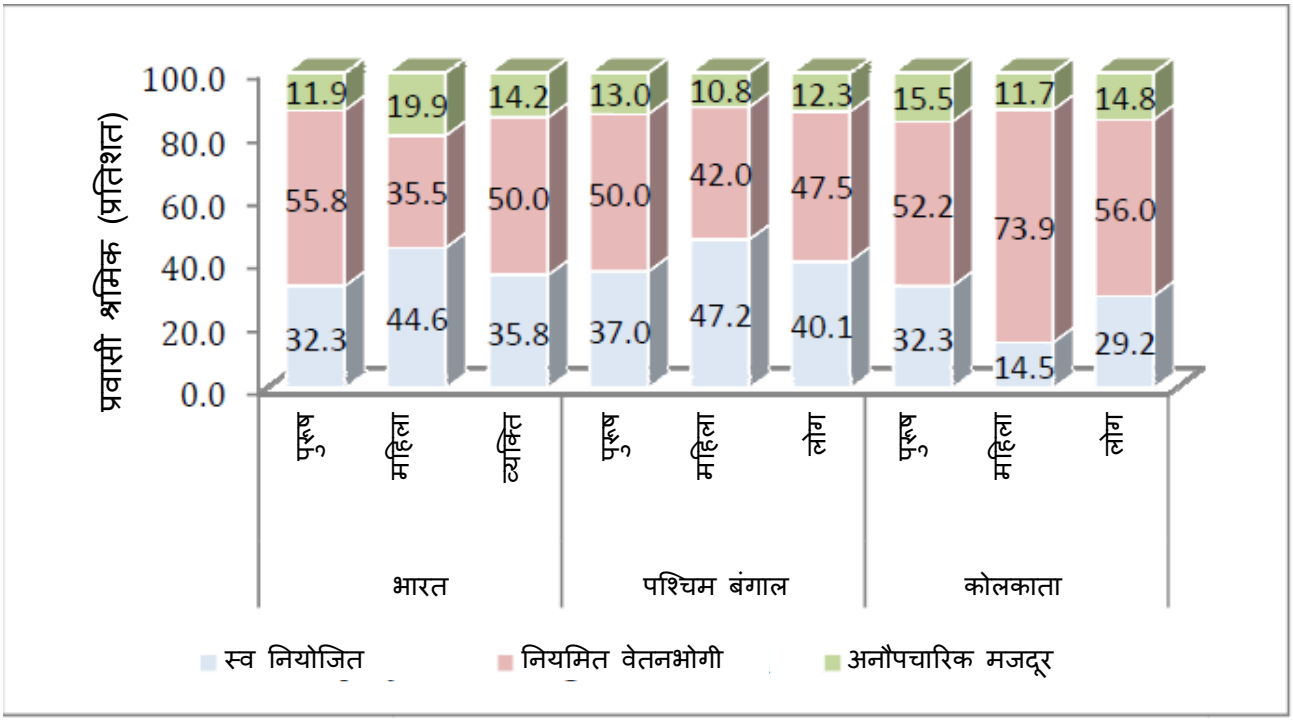

स्रोतः यूनिट लेवल डेटा ऑफ़ एनएसएसओ, माइग्रेशन इन इंडिया, 64वां राउंड (2007-08)

जैसा कि पिछले पैराग्राफ में कहा गया है कि कोलकाता अधिक रोजगार के अवसर प्रदान करता है; यह पता लगाना अत्यंत ही महत्वपूर्ण है कि रोजगार कार्यकर्ताओं के सही अवसर प्रदान किए जाते हैं। सभी कार्य स्थितियों को देखते हुए श्रमिकों के क्षेत्रीय अलगाव विरोध करते हैं कि शहरी क्षेत्रों में प्राथमिक गतिविधियों के लिए बहुत कम गुंजाइश प्रदान किए जाते हैं। भारत में प्रवासियों का लगभग एक चौथाई भाग विनिर्माण क्षेत्र में है जो पश्चिम बंगाल में कोलकाता में लगभग एक तिहाई तक बढ़ गया है। अन्य क्षेत्र जिसमें प्रवासियों को आजीविका संभावनाएं प्रदान की जाती है वे थोक और खुदरा

व्यापार, होटल और रेस्तरां हैं। दिलचस्प बात यह है कि शिक्षा का क्षेत्र जो भारत और पश्चिम बंगाल में कुल महिला श्रमिकों के 11-15% भाग को रोजगार प्रदान करता है तथा कोलकाता में 34 प्रतिशत महिलाएं कार्यरत हैं। स्नातक और उससे ऊपर की उच्च शिक्षा से इन महिलाओं को शहर में प्रवास करने तथा शिक्षक के रूप में काम करने के लिए प्रभावित किया होगा। उदाहरण के लिए, शैक्षिक क्षेत्रों में नियमित वेतनभोगी महिला श्रमिकों के पास 63 प्रतिशत भाग स्नातक और इससे ऊपर की योग्यता हैं। दूसरे छोर पर, लगभग 22 प्रतिशत महिला श्रमिक कोलकाता में घरेलू नौकरानी के रूप में काम करते हैं जो भारत में 9 प्रतिशत और पश्चिम बंगाल (तालिका क2) में 18 प्रतिशत के बराबर निम्न है।

प्रवासी मजदूरों पर चर्चा तब तक अधूरा है जब तक कि प्रवास और जाति/वर्ग ओवरलैप के बीच गठजोड़ की पड़ताल न किया जाए। मासिक प्रति व्यक्ति उपभोग व्यय से चार चतुर्थक वर्गों में जनसंख्या के वितरण से पता चलता है कि पहले चतुर्थक वर्ग में पलायन दर सबसे कम है और इसे व्यवस्थित रूप से निम्नतम से सर्वोच्च क्रम चतुर्थक वर्गों तक बढ़ता है (तालिका 2)।

तालिका 2: शहरी भारत, पश्चिम बंगाल तथा कोलकाता के चतुर्थांश वर्गों में प्रवासन दर।

	भारत			**पश्चिम बंगाल**			**कोलकाता**		
चतुर्थांश वर्ग	पुरूष	महिला	व्यक्ति	पुरूष	महिला	व्यक्ति	पुरूष	महिला	व्यक्ति
प्रथम चतुर्थांश	12.6	38.8	25.8	15.0	42.3	29.0	24.6	29.0	26.7
दूसरा चतुर्थांश	19.9	43.8	31.4	20.4	47.1	32.8	28.4	30.0	29.1
तीसरा चतुर्थांश	29.6	48.0	38.3	29.1	51.7	39.4	24.9	37.0	29.9
चौथा चतुर्थांश	40.5	52.4	46.1	29.7	53.3	41.2	26.4	43.1	34.7
कुल	25.9	45.6	35.4	23.3	48.2	35.3	26.1	36.6	30.9

स्रोतः यूनिट लेवल डेटा ऑफ़ एनएसएसओ, माइग्रेशन इन इंडिया, 64$^{वां}$ राउंड (2007-08)

भारत, पश्चिम बंगाल और कोलकाता के लिए इस तरह का अवलोकन सत्य है। दिलचस्प बात है कि जैसाकि तालिका 2 में सुझाव दिया गया है, भारत और पश्चिम बंगाल की तुलना में कोलकाता में गरीब आदमी के पलायन काफी ज्यादा है, जो रोजगार के कारणों के लिए पुरुषों के प्रवाह को दर्शाता है। डेटा के एक आगामी पार-वर्गीकरण से पता चलता कि एक स्पष्ट सहमति है कि भारत और पश्चिम बंगाल में अमीर और उच्च वर्गों की तुलना में गरीब लोगों का पलायन दर अनुसूचित जाति द्वारा प्रभावित होता है। हालांकि, इस तरह कोई पैटर्न कोलकाता में नहीं पाया गया है। कोलकाता में

प्रवासन चतुर्थक वर्ग पर ध्यान दिए बिना गैर अनुसूचित जाति द्वारा प्रभावित होता है। उनके श्रम बाजार में एक खाई से पता चलता है कि गरीब लोगों के काम की भागीदारी दर केवल शहरी पश्चिम बंगाल में सबसे अधिक है। अखिल भारतीय स्तर पर और कोलकाता में ऐसा कोई संबंध नहीं सामने नहीं आता हैं। इसके अलावा, जैसा कि पहले बताया गया है, कोलकाता में सर्वोच्च आकस्मिक मजदूरों का अनुपात है जैसाकि वर्तमान अध्ययन में आगे इस प्रस्ताव की पुष्टि की गई है। आंकड़ों से पता चलता है कि शहर में सबसे गरीब पुरुष प्रवासियों के बीच आकस्मिक श्रम सबसे अधिक है, जबकि शहरी भारत में और पश्चिम बंगाल में अपने समकक्षों के मुख्य रूप से स्वरोजगार हैं। इससे पता चलता है कि गरीब प्रवासी शहर में कैसे आते हैं और वे अनौपचारिक क्षेत्र में रोजगार पाते हैं। इस पत्र (तालिका क3) के अगले भाग में इसका गहन अध्ययन किया गया है।

उपर्युक्त चर्चा के लिए कुछ अनुमान की आवश्यकता है।

सबसे पहले, कोलकाता जैसे शहरों में रोजगार के सबसे सुरक्षित श्रेणी के अधिक से अधिक आजीविका के विकल्प और स्थान प्रदान करते किए जाते हैं। लेकिन, इसे गंभीर रूप से देखने की जरूरत है क्योंकि इसमें नियमित वेतनभोगी नौकरी प्रशासकों, शिक्षकों से लेकर घरेलू नौकरानी तक के बड़ी विविधता शामिल है। कम शैक्षिक और कौशल सिद्धियों को देखते हुए, कोलकाता में शहर में काम पाना गरीब प्रवासियों के लिए कठिन प्रतीत होता है। जहां कही भी वे कार्यरत हैं, वे मुख्य रूप से आकस्मिक प्रवासियों के रूप में है जो प्रवासी, गरीब, निरक्षर और मजदूर के रूप में श्रमिकों जैसे कई कमजोरियों को दर्शाता है।

दूसरी ओर, अधिकांश प्रवासी विनिर्माण, थोक और खुदरा व्यापार और परिवहन क्षेत्र में लगे हुए हैं, जबकि महिलाओं को आमतौर पर शैक्षिक क्षेत्रों में या घरेलू के रूप में केंद्रित किया गया हैं, जिसे आम तौर पर 'स्त्री' के रूप में नामित किया गया है।

तीसरी ओर, शहरी जीवन की बढ़ती मांग और उत्पादक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी से घरेलू नौकर की मांग अनिवार्य हो जाती है जिसे सबसे अच्छा तरीके से प्रवासी महिला श्रमिकों द्वारा भरा जा सकता है। हालांकि, नियमित वेतनभोगी कर्मचारियों के दायरे आकर, इन महिला कामगारों को आर्थिक गतिशीलता के कम से कम उम्मीद के साथ आर्थिक पदानुक्रम के निचले पायदान पर जाया जाता हैं।

II कोलकाता में स्लम विकास और प्रवासन

पुरुषों के ग्रामीण-शहरी पलायन जो अक्सर आजीविका की रणनीति से जुड़ा हुआ है पिछले कुछ वर्षों में व्यवस्थित रूप से कम हो गया है। उदाहरण के लिए, यह 1999-2000 में 32 प्रतिशत से घट कर 2007-2008 में 31 प्रतिशत हो गया है। ऐसी स्थिति इस लिए आई है क्योंकि वैश्विक शहरीकरण की प्रक्रिया की वजह से गरीबो के लिए शहरों में रहना कम वहनीय हो गया है इसके साथ ही स्लम एरिया को भी हटाया जा रहा है जिससे प्रवासियों के लिए शहरी क्षेत्रों में रहना कठिन हो गया है। इसी समय, अर्बन इलाईट द्वारा भूमि का अधिग्रहण, चल रही शहरी मिशन के तहत अवसंरचनात्मक विकास, मूल्य निर्धारण, गरीबों द्वारा बुनियादी सुविधाओं के गैर-वहनीयता, शासन में इस इलाईट अधिग्रहण के पहलू आदि इस सुस्त ग्रामीण-शहरी परिवर्तनों की व्याख्या करते हैं। हालांकि, ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका के अवसर सीमित रूप से मौजूद है, फिर भी इस प्रकार के शहरी विकास देश में अपवर्जनात्मक शहरीकरण को प्रकट करते है जिससे शहरों में पैर जमाने से निम्न सामाजिक और आर्थिक श्रेणियों के व्यक्तियों को शहरों में पलायन करने से रोकते है और इसे हतोत्साहित करते हैं और इससे शहरी पदानुक्रम के निम्नतम स्तर पर विकास की गतिशीलता में बाधा आती है। (कुंडू 2011क तथा 2011ख; महादेविया 2011)। इससे पता चलता है कि कई शहरी क्षेत्रों में हो रहे निवेश के बावजूद वे धीरे-धीरे ग्रामीण गरीबों के लिए अलगाव की भावना के स्थानों होते जा रहे हैं, हालांकि मौसमी और संचार श्रम गतिशीलता में वृद्धि हुई है (श्रीवास्तव और भट्टाचार्य 2003, श्रीवास्तव 2011)।

अमीर वर्गों की तुलना में सभी स्तरों पर गरीब लोगों का शहरों की ओर पलायन दर कम है- अध्ययन के पिछले भाग में इसका अच्छी तरह से वर्णन किया गया है। हालांकि, कोलकाता की ओर बढ़ रही गरीब पुरुषों का पलायन दर भारत और पश्चिम बंगाल की तुलना में अधिक है। इस तरह के निष्कर्ष निश्चित रूप से बताते हैं कि कोलकाता गरीब लोगों के लिए कुछ खुले अवसर प्रदान करता है। इस पृष्ठभूमि के भीतर, मुख्य प्रश्न यह उठता है कि ये लोग किस ओर अग्रसर होंगे और वे शहर में कहां आश्रय और कार्य प्राप्त करेंगे?

कई अध्ययनों से पता चला है कि स्लम और फुटपाथ में बड़ी संख्या में गरीब प्रवासियों को आश्रय मिलते हैं। उदाहरण के लिए, मुंबई स्लम, नारायणन के एक अध्ययन (2008) में पाया गया कि निवासियों के 92 प्रतिशत प्रवासी थे। कोलकाता स्लम के एक अन्य अध्ययन में, मुखोपाध्याय (1993) से पता चला है कि अधिकांश परिवार ग्रामीण प्रवासियों से बने हैं जो आम तौर पर हिंदी बोलते हैं। इस प्रकार, कोलकाता शहर समाज के निचले आर्थिक पायदान के प्रवासियों के लिए आवास और रोजगार के अवसर प्रदान करता है। वे स्लम बस्तियों में रहते हैं और विभिन्न परिवहन - वैन, रिक्शा चालक, निर्माण - छोटे पैमाने पर और अन्य सेवाओं धातु, कपड़ा, लकड़ी, भोजन और अन्य

उत्पादों और माल के छोटे पैमाने पर व्यापार के क्षेत्र में लगे हुए हैं। कभी-कभी स्लम[5] के भीतर व्यापार और विनिर्माण इकाइयों का अस्तित्व होता है और यहां तक कि झुग्गीवासी उनके आवासीय क्षेत्रों के बाहर सफाईकर्मी के रूप में और अन्य सेवक नौकरियों में कार्यरत हैं (रॉय 1994, डे और दासगुप्ता 2010)।

इस पृष्ठभूमि में, अध्ययन में कोलकाता में प्रवास और स्लम विकास जटिलता का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। तीन सौ से अधिक वर्षों से पहले कोलकाता शहर को एक बंदरगाह शहर के रूप में 1690 में मुख्य रूप से अपने देश में आसानी से यात्रा करने के लिए लेकिन तैयार माल और कच्चे माल का आसानी से आयात करने के लिए के प्रयोजन के लिए भी अंग्रेजों द्वारा स्थापित किया गया था। 1772 में, कोलकाता ब्रिटिश भारत की राजधानी बन गया, और 1912 तक राजधानी बना रहा जब ब्रिटिश सरकार ने दिल्ली को राजधानी बना लिया।

शहर के बढ़ते महत्व के साथ, संचार प्रणाली अच्छी तरह से विकसित की गई और आगे सुधार के लिए डॉक्स का निर्माण किया गया। यह पर अवश्य ध्यान दिया जाना चाहिए कि 1866 तक, कोलकाता का बंदरगाह एक बहुत छोटा सा हिंटरलैंड था जिसमें केवल हावड़ा, हुगली, 24 परगना और पूर्वी बंगाल का छोटा सा हिस्सा था, लेकिन 1900 तक कोलकाता का बंदरगाह पूरे बंगाल, बिहार, असम और उत्तर पश्चिमी प्रांतों के दूरदराज के इलाकों की आवश्यकताओं को पूरा करता था (बेली 1985; तान 2007)। व्यापार में वृद्धि के साथ, बंदरगाहों और वाणिज्य के विकास से रोजगार की तलाश करने वाले कोलकाता को ग्रामीण गरीबों को आकर्षित किया। चूंकि संचार प्रणाली उन्हें दैनिक आवाजाही के लिए के लिए सुविधाजनक नहीं था इसलिए उन्हें मैले और अवमानक स्थिति में रहना पड़ा जिससे तथाकथित स्लम बस्तियों को जन्म हुआ। कोलकाता के स्लम और शहर जुड़वां बच्चों के रूप में पैदा हुए थे। कंपनी के शासन के दिनों के बाद से ही, यह शहर अपने तत्काल दूरदराज के इलाकों से लोगों को आकर्षित करना शुरू कर दिया था। इससे अलग-अलग स्थानों पर अपमानित मानव बस्तियों का निर्माण हुआ (कुंडू 2007)।

स्लम बस्तियों का विकासः अतीत और वर्तमान

रॉय (1994) के कार्य पर मुख्य रूप से ण्यान देते हुए, कोलकाता के स्लम बस्तियों की उत्पत्ति को दो व्यापक श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है: स्लम बस्तियां जो विशेष रूप से औद्योगिक विकास

[5] कोलकाता की पूरी घोषित बस्ती क्षेत्रों में, धातु उत्पादों, चमड़े के उत्पाद, लकड़ी, कागज, मुद्रण और बांइडिंग, खाद्य सामग्री डेयरी उत्पाद, मिट्टी के सामान आदि के कुछ 3736 पूर्ण औद्योगिक प्रतिष्ठान हैं (रॉय 1994)।

और शहरीकरण से पहले विशेष रूप से ब्रिटिश शासन के प्रारंभिक काल के दौरान विकसित हुए तथा दूसरी ओर स्लम बस्तियां औद्योगीकरण की प्रक्रिया के बाद विकसित हुई। पहले चरण में, बस्ती में रहने वाले लोग अंग्रेजी परिवारों की सेवा करने के लिए आए। शाही शासकों के जीने की भव्य शैली ग्रामीणों की बड़ी संख्या को शहर में आकर्षित किया। उनके आवासों को अंग्रेजों के क्वार्टरों के बहुत निकट विकसित किया गया ताकि उनकी सेवाओं को सुबह से देर रात तक प्राप्त किया जा सके। उनके आवास को 'सबसे पॉश इलाकों के काफी नजदीक से देखा जा सकता है (रॉय 19994:6)। स्लम बस्तियों का दूसरा चरण औद्योगीकरण की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप हुआ। ब्रिटिश राजधानी की तेजी से विकास के कारण शहर के आसपास जूट और इंजीनियरिंग उद्योगों का विकास हुआ। इसके अलावा, रेलवे, डाक सुविधाओं, बैंकों आदि के आने से हुगली नदी के तट पर चालीस मील की दूरी पर जनसंख्या का प्रसार हुआ। शहर में ट्राम पथ का निर्माण होने से और ट्राम कंपनी में काम करने के लिए कई लोग कोलकाता की ओर पलायन करने के लिए आकर्षित हुए। स्लम क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के इस समूह के ज्यादातर लोग शहर के मध्य भाग में पाए गए (ओपी सीआईटी)।

औद्योगीकरण और तेजी से शहरी विकास के परिणाम के रूप में, सभी पूर्वी और उत्तरी भारत के कामगार रोजगार और आय की तलाश में शहर की ओर आए। इन क्षेत्रों में कार्यरत श्रमिक देर से आने वालों में से थे; उन्हें मध्य भाग में शरण नहीं मिल सका। उनकी स्लम बस्तियां पश्चिमी किनारे में खिडरपोर डॉक एरिया तथा पूर्वी किनारे में मनिकटोला और बेलियाभाटा और उत्तर की ओर कासीपुर में देखा जा सकता है। शहर में बस्ती समुदायों न केवल अपने व्यावसायिक पहचान को बनाए रखे, बल्कि अपने व्यवसायों के साथ साथ अपने स्वयं के आवासीय और भाषाई पहचान को बनाए रखने की भी कोशिश की। बस्ती में रहने वाले लोगों का सबसे बड़ा समूह जो शहर में आए वे बिहार और उत्तर प्रदेश से थे। हिंदुओं और मुसलमानों को मिलकर, वे हिन्दी में बात करते थे और उत्तरी, पूर्वी और दक्षिणी इलाकों के बस्तियों के क्षेत्रों पर कब्जा किए। मुस्लिम आबादी विशेष रूप से निम्न जाति के मुसलमान पूर्व और उत्तर-पूर्व के सल्म बस्ती जिलों में किरायेदारों के रूप में रहते थे (रॉय 1994)।

1951-61 के दौरान, लगभग 7,34,000 लोगों ने शहर में प्रवेश किया था (रॉय 1994)। प्रवासियों के ये समूह पश्चिम बंगाल के विभिन्न भागों के साथ ही बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, असम और दक्षिण भारत के अन्य भागों से थे। प्रवासियों के ये समूह ज्यादातर जूट और इंजीनियरिंग उद्योग में कार्यरत थे। वे अकुशल मजदूर थे। वे सभी कमाने के उद्देश्य के लिए आए थे और उनमें से ज्यादातर शहर के बस्ती क्षेत्रों में शरण प्राप्त किए। पलायन का विकास न केवल शहर की जनसंख्या वृद्धि में योगदान था; बल्कि इससे शहर में गैर-बंगाली आबादी की संख्या में भी वृद्धि हुआ।

हालांकि, माध्यमिक डेटा से कोलकाता के स्लम बस्तियों में गरीब प्रवासियों की उपस्थिति की सीमा का अनुमान लगाना कठिन है फिर भी एक प्राथमिक सर्वेक्षण किया गया है। जनगणना 2001 के आंकड़ों के मुताबिक, कोलकाता में औसत स्लम आबादी 32.5 प्रतिशत, जो पश्चिम बंगाल (18.4 प्रतिशत) और भारत (14.9 प्रतिशत) की तुलना में काफी ज्यादा है। कोलकाता में वार्ड-वार स्लम आबादी 5-10 प्रतिशत से 99-100 प्रतिशत के बीच है (जनगणना, 2001)। कोलकाता में कुल 141 वार्डों में से एक वार्ड जो स्लम निवासियों का लगभग 99 प्रतिशत परिवार है जिसे ध्यान में रखा गया है ताकि प्रवासियों का बड़ा नमूना हासिल किया जा सके[6]।

कोलकाता में मुस्लिम प्रवासीः फील्ड सर्वेक्षण से सबूत

प्रवासियों के ग्रामीण/शहरी पृष्ठभूमि

सर्वेक्षण किए गए क्षेत्र के प्रवासी[7] मुख्य रूप से ग्रामीण मूल के हैं। कुल प्रवासियों में से 81 प्रतिशत ग्रामीण पृष्ठभूमि से है, जबकि शेष शहरी क्षेत्रों से हैं हैं। लिंग के लिहाज से, ग्रामीण क्षेत्रों से महिलाओं की तुलना में पुरुषों की संख्या अधिक है। उदाहरण के लिएः महिलाओं के 73 प्रतिशत की तुलना में पुरुषों के 91 प्रतिशत मूल रूप से ग्रामीण हैं। शेष पुरुष (9 प्रतिशत) और महिलाएं (27 प्रतिशत) अन्य शहरी केंद्रों से आए हैं। इस प्रकार, कोलकाता के स्लम बस्तियों में स्थानांतरित होने वाले पुरुषों के लिए ग्रामीण पृष्ठभूमि का होना पूर्व प्रमुख क्षेत्र है। हालांकि एक बहस अभी शेष है कि क्या वे बड़े या छोटे/भूमिहीन किसान है जो प्रवास करते है, भारत के विभिन्न भागों में किए गए अध्ययन से पता चलता है कि अमीर और छोटे दोनों किसानों के लिए गतिशीलता एक विकल्प है। करण (2003) के एक अध्ययन से पता चलता है कि भूमिहीन परिवारों के बाद भूमि के मालिक वर्ग (5 एकड़ से अधिक) द्वारा गतिशीलता की सबसे ज्यादा घटनाओं को इंगित करता है। हालांकि, दो वर्गों के प्रवासी पैटर्न में एक अंतर किया जा सकता है- बेहतर प्रवासी जो लंबी दूरी तक जाते है जो अपेक्षाकृत अधिक शिक्षित हो सकते है और ऐसे प्रवास में शामिल वित्तीय लागत का वहन कर सकते हैं। भूमिहीन वर्ग लघु दूरी का प्रवास करते है जो अस्थायी प्रकृति का होता है (कैन्नेल एट अल 1976, यादव एट अल 1996)। वर्तमान अध्ययन इस प्रस्ताव की पुष्टि करता है। पुरुष प्रवासियों में से 30 प्रतिशत भूमिहीन

---

[6] कोलकाता में वार्ड वार स्लम आबादी को चित्रित करने के लिए 2001 की जनगणना के आंकड़ों का इस्तेमाल किया गया है। इस डाटा से आगे के अध्ययन के क्षेत्र की पहचान करने में मदद मिली है। सर्वेक्षण जनवरी से जुलाई, 2010 से किया गया था।

[7] कुल 432 प्रवासियों का सर्वेक्षण किया गयाः 202 पुरुष और 230 महिलाएं।

हैं। यहां तक कि अगर उनके पास भूमि है भी तो उनमें से लगभग सभी (98 प्रतिशत) कम से कम 1 हेक्टेयर जमीन की जोत के साथ सीमांत किसान हैं। इसी तरह, जाति, एक सामाजिक संस्था के रूप में अक्सर लोगों के प्रवास को निर्धारित करता है जिससे गांवों से अनुसूचित जाति बड़े पैमाने पर प्रवास करते है। वर्तमान अध्ययन में, प्रवासी पुरुषों का लगभग 66 प्रतिशत हिस्सा अनुसूचित जाति के हैं (देसिंगकर और स्टार्ट 2003)। इससे पता चलता है कि प्रवासी न केवल ग्रामीण हैं, बल्कि कई पहलुओं में हाशिए पर भी हैं।

जहां तक महिला प्रवासियों का संबंध है, यह देखा गया है कि कुछ को छोड़कर, उनमें से लगभग सभी संबद्धात्मक प्रवासी हैं। पुरुषों के संबंध में उनके साथ के रिश्तेदार का मूल्यांकन कुछ हद तक मुश्किल हो जाता है। जमीन के स्वामित्व पर ध्यान नहीं दिया गया है क्योंकि यह पति-पत्नी के साथ ही प्रसव स्थानों के रूप में उनके भूमि अधिकार पर विचार करना कठिन है (पार्लीवाला और यूबेराय 2008)[8]। ग्रामीण/शहरी मूल पर ध्यान दिए बिना जाति की धुरी के रूप में कोई बड़ा अंतर नहीं है, अधिकांश महिलाएं गैर-अनुसूचित जाति/अन्य पिछड़ा वर्ग जाति के हैं।

उत्पत्ति के राज्य/जिले

वर्तमान संदर्भ में, यह देखा गया है कि चूंकि कोलकाता एक एकल जिला बनाता है और यह पूरी तरह से एक शहरी क्षेत्र है, इसलिए कोलकाता में कोई अंतर-जिला पलायन नहीं है। केवल अंतर-जिला और अंतर-राज्य गतिशीलता मौजूद हैं। सारणी 3 दर्शाता है कि शहर के अलग-अलग राज्यों के ग्रामीण इलाकों से आए प्रवासियों को आकर्षित करता है (प्रेमी 1980, पाइस 2006; शिवरामकृष्णन 2011)[9]। इसके अलावा, ग्रामीण लोग अपने राज्यों के छोटे शहरों में अवशोषित होने के बजाय मेगा सिटी के अवसरों का लाभ उठाने के लिए विभिन्न राज्यों से बड़ी दूरी पार करके कोलकाता आते हैं। इस प्रकार,

---

[8] चूंकि, भूमि एक पोर्टेबल संपत्ति नहीं है, भूमि अधिकार में किसी बेटी का विरासत, जब कि राज्य द्वारा कानूनी तौर पर मान्यता प्राप्त नहीं है, अगर एक महिला को विवाह के उपरांत अपने जन्म इलाके से दूर जाना अपेक्षित है तो भी पुरुष के दावों के खिलाफ जोर देना कठिन है। अथवा, इसके अग्रभाग में, बेटियों को हिंसक रूप से कहा जा सकता है ताकि विरासत में मिली भूमि लेने से बेटियों को रोका जा सके।

[9] भारत में किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि दस लाख से अधिक शहरों में अंतर-राज्यीय प्रवासी आते हैं। बाहरी दुनिया के साथ अपने संपर्क के आधार पर, शहर निवेश के लिए महत्वपूर्ण स्थान बन गए हैं। यहां तक कि, जनशक्ति और उनके कौशल को भी अपनी सीमाओं के पार से पूरा किए जाने की जरूरत है। उदाहरण के लिए, मुंबई ज्यादा निवेश का स्थान बन गया है और महाराष्ट्र के भीतर से और देश भर से कार्य बल आते हैं। अध्ययनों से पता चलता है कि मुंबई का बड़ा हिस्सा गरीब ग्रामीण महाराष्ट्र अर्थात अंतर-राज्य ग्रामीण प्रवासियों के अलावा अन्य दूरदराज के इलाकों से भी आकर्षित प्रवासियों के रूप में आते हैं।

तर्क दिया जा सकता है कि अंतर-राज्य शहरी प्रवासी को अपने स्वयं के क्षेत्रों में रोजगार मिल सकता है, जबकि बड़े शहरों की ओर पलायन ग्रामीण गरीबों के लिए एकमात्र विकल्प रहता है।

तालिका 3: प्रवासन की धाराएं और उनके ग्रामीण-शहरी स्थान

प्रवासन की धाराएं	**पुरूष**	**महिला**	**व्यक्ति**
i) ग्रामीण	5.9	17.4	12.0
ii) शहरी	0.5	9.6	5.3
कुल अंतर-राज्य	6.4	27.0	17.4
iii) ग्रामीण	84.7	57.0	71.1
iv) शहरी	8.9	16.1	11.6
कुल अंतर-राज्य	93.6	73.0	82.6
कुल (i+ii+iii+iv)	100.0	100.0	100.0

स्रोतः फील्डवर्क, जनवरी - जुलाई, 2010 के आधार पर।

महिला प्रवासी थोड़े अलग तस्वीर का प्रतिनिधित्व करते हैं। लगभग एक-चौथाई प्रवासी महिलाएं इसके राज्य से ही होती हैं शेष अंतर-राज्यों के प्रवासी हैं- जो मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों से आती हैं। इसका मुख्य कारण है; महिलाओं के कुछ अनुपात कुल ग्रामीण पलायन धारा में अपने हिस्से का योगदान देते हुए अपने पति का साथ देती है। उसी समय, महिलाएं भी शादी के लिए लायी गई और इस प्रकार अन्य क्षेत्रों से भी लाए गए।

जिला स्तर विश्लेषण से पता चलता है कि पश्चिम बंगाल के भीतर, प्रवासी मुख्य रूप से दक्षिण 24 परगना से हैं (पुरुष 4 प्रतिशत, महिलाएं-8 प्रतिशत)। ये सभी प्रवासी ग्रामीण क्षेत्रों से हैं। प्रवासियों के इस प्रवाह के लिए उद्धृत संभावित कारणों में राज्य में खारा और दलदली मिट्टी में कृषि के क्षेत्र में विकास की कमी तथा गरीबी का उच्च स्तर होना हैं (1999-00 में ग्रामीण आबादी का 27 प्रतिशत हिस्सा गरीबी रेखा से नीचे निहित है) (पश्चिम बंगाल मानव विकास रिपोर्ट 2004)। इस क्षेत्र से महिलाएं मुख्य रूप से अपने पति के साथ पलायन करती हैं। कुल मिलाकर, प्रवासी कोलकाता में मुख्य रूप से आस-पास के क्षेत्रों से हैं या उन जिलों से हैं जो शहर के चारों ओर एक कंसेंट्रिक चक्र बनाते हैं। कोई भी प्रवासी दार्जिलिंग, जलपाईगुड़ी आदि जैसे सुदूर जिलों से नहीं आएं थे।

अंतर-राज्यीय गतिशीलता में इस क्षेत्र में प्रवासियों का एक बड़ा हिस्सा शामिल है। राज्यों में बिहार मुख्य भेजने के क्षेत्र है और उसके बाद उत्तर प्रदेश और झारखंड आता है। बहुत कम प्रवासी, विशेष रूप से पुरुष उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा और महाराष्ट्र जैसे राज्यों दूर से आते हैं (चित्र 2 और 3)। जिला स्तर पर डेटा के एक आगामी पार-वर्गीकरण से पता चलता है कि बिहार के भीतर, जमुई राज्य का सबसे ज्यादा प्रवासी भेजने वाला जिला के रूप में उभरा है (पुरुष 49 प्रतिशत; महिलाएं 7 प्रतिशत)। शहरीकरण का निचला स्तर, सकल जिला घरेलू उत्पाद, जिले में सामाजिक पिछड़ेपन के साथ फसल की तीव्रता का बाहर पलायन करने में मुख्य भूमिका है (आर्थिक सर्वेक्षण, 2007)[10]। वर्तमान अध्ययन में, जमुई से पुरुष प्रवासियों के 56 प्रतिशत हिस्से से पता चला कि मुख्य रूप से गरीबी, ग्रामीण गैर-कृषि रोजगार की कमी के साथ ही कृषि कार्य के गैर-लाभकारी प्रकृति जैसे कारकों से उन्हें कोलकाता की ओर पलायन करना पड़ा। हालांकि, जमुई की तुलना में अनुपात में काफी कम पुरुष प्रवासी लखीसराय, मुंगेर, नालंदा, सारण आदि जैसे जिलों से आ रहे हैं।

[10] कुल मिलाकर एक चौथाई से अधिक प्रवासी जमुई से है और पुरुषों के मामले में हैं यह आंकड़ा लगभग आधा है। डेटा के माध्यमिक स्रोतों की जांच से पता चलता है कि समग्र रूप से बिहार एक ऐसा राज्य है जो काफी कम प्रति व्यक्ति आय से ग्रस्त है। बिहार राज्य के भीतर भी काफी विसंगति मौजूद है। यदि सकल जिला घरेलू उत्पाद की प्रति व्यक्ति अनुमान 2005-2006 की 1999-00 के स्थिर मूल्यों पर माना जाता है तो पटना (37,737 रुपए), मुंगेर (12,370 रुपए) और बेगुसराय (10,409 रुपए) आर्थिक रूप से सबसे समृद्ध जिलें रहे हैं, जबकि जमुई (5516 रुपए) सबसे कम विकसित जिला के तहत आता है। इसके अलावा, विशेष रूप से यह जिला कृषि में आर्थिक रूप से ठोस नहीं है - इसके केवल 20 प्रतिशत भूमि पर ही कृषि होती है। सिंचाई सुविधाएं न्यूनतम हैं; फसल की तीव्रता पूरे राज्य में 1.10 पर सबसे कम है। आर्थिक विकास के अलावा, जमुई सामाजिक क्षेत्रों के मामले में भी पीछे है। इसकी जनसंख्या का 92.5 प्रतिशत हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है जो समग्र रूप से राज्य के 89.5 प्रतिशत की तुलना में कम है। इसके अलावा, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति का अनुपात 17.4 और 4.8 प्रतिशत है जबकि राज्य में यह अनुपात 15.0 और 0.9 प्रतिशत है। धार्मिक अल्पसंख्यकों में जिले की जनसंख्या का 12.2 प्रतिशत शामिल हैं (आर्थिक सर्वेक्षण 2007)। इसलिए, निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति लोगों के पास कोई अन्य विकल्प छोड़ता है, लेकिन, कोलकाता में काम की तलाश करते है। पहले से गरीब लोगों ने शहर के स्लम बस्तियों में शरण प्राप्त कर लेते हैं।

चित्र 2: पुरुष प्रवासियों के स्रोत क्षेत्र

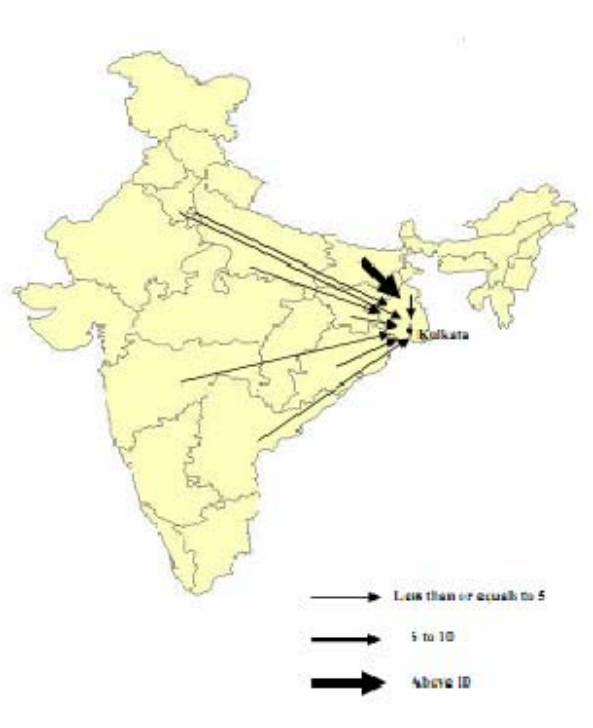

चित्र 3: महिला प्रवासियों के स्रोत क्षेत्र

स्रोतः फील्डवर्क, जनवरी से जुलाई, 2010 के आधार पर

संक्षेप में, प्रवासियों को आकर्षित करने के लिए एक केंद्र के रूप में कोलकाता का प्रभाव देश के पूर्वी भाग तक ही सीमित रहा है। राज्य के भीतर इसके प्रभाव इसके आस-पास के जिलों विशेष रूप से दक्षिण 24 परगना के उदास और आसपास के जिलों तक ही सीमित है। सुदूर उत्तरी जिलों में कोलकाता का प्रभाव महसूस नहीं किया गया है। बिहार के मामले में यह देखा गया है कि पलायन क्षेत्र पूरे राज्य में बिखरे हुए है हालांकि स्थानिक नजदीकी पूर्वी और दक्षिणी जिलें जैसे जमुई, लखीसराय, मुंगेर, बांका आदि अधिक प्रभावित लगते हैं। कुछ लोग सारण, सीवान और नालंदा के दूर-दराज के जिलों से भी कोलकाता आते हैं। महिलाओं के लिए ऐसा कोई पैटर्न नहीं उभर रहा हैं और वे अपने संबंधितों के साथ विभिन्न क्षेत्रों से लाई जाती हैं।

प्रवास का कारण

केंद्र परिधीय क्षेत्र के संदर्भ में आयोजित संरचनात्मक परिप्रेक्ष्य; औद्योगिकृत-किसान आधारित; पश्चिम और उत्तर-पूर्व और दक्षिण आदि में पुरुषों की गतिशीलता का ज्यादा उल्लेख किया गया हैं। कुछ लोग मूल के क्षेत्रों के 'पुश' कारकों के जवाब में बाहर चले जाते हैं (भयावह गरीबी, ग्रामीण गैर-कृषि रोजगार

आदि की कमी), जबकि कुछ लोग दूर देश में मौजूदा अवसरों को प्राप्त करने के लिए 'आकर्षित' हो जाते हैं (नौकरियों की उपलब्धता, ग्रामीण क्षेत्रों आदि की तुलना में अधिक वेतन)। हालांकि, पलायन के यह आयाम पुरुषों के मामले में लागू है, जबकि महिलाएं विवाह, परिवार पलायन आदि जैसे सामाजिक-सांस्कृतिक मानदंडों द्वारा निर्देशित होती है। (डी हान 2001; करण 2003)।

इस खंड में पलायन के कारणों का पता लगाने के लिए प्रयास किया गया है। फील्ड अंतर्दृष्टि से कई प्रकार के कारकों का पता चलता है जो कि माध्यमिक डेटा स्रोतों में स्पष्ट रूप से सीमांकित नहीं है। समग्र रूप में, प्रवास के कारणों को आर्थिक, सामाजिक और अन्य कारकों में वर्गीकृत किया गया हैं।

तालिका 4 से पता चलता है कि पुरुषों के लिए पलायन का मुख्य उद्देश्य रोजगार रहा है (68.8 प्रतिशत)। मूल क्षेत्रों के पुश (जैसे गरीबी, कम मजदूरी, काम आदि की अनुपलब्धता) की तुलना में, पुरुषों को शहर में काम की तलाश में, बेहतर नौकरी के लिए भेज दिया जाता है। कोलकाता की ओर जाने या भेज दिए जाने के अलावा, अन्य आर्थिक कारक भी उत्तरदायी होते हैं- अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि, प्रवासी अपने पूर्ववर्तियों के कब्जे में ही बने रहते है। हालांकि, शहर में अकेले जाने वाले ज्यादातर पुरूष समान पेशे में बने रहते हैं। उनके लिए, प्रवास की श्रृखला और शहर में काम करना प्रवास का एक बड़ा हिस्सा है, जिस पर उनके घरेलू जरूरतों के साथ ही कृषि कार्य भी निर्भर करते हैं।

तालिका 4: प्रवास का कारण

प्रवास का कारण	पुरूष	महिला	व्यक्ति
i. पुश कारक			
कृषि कार्य लाभकारी नहीं है	7.9	0.0	3.7
गैर कृषि रोजगार की अनुपलब्धता	6.4	0.0	3.0
मूल क्षेत्र में कम मजदूरी/आय	4.5	0.0	2.1
गरीबी	5.0	0.0	2.3
ii. पुल कारक			
कार्य की तलाश में	35.6	3.0	18.3
शहर में बेहतर नौकरी मिलने के लिए	1.5	0.0	0.7
iii. अन्य रोजगार कारण			
व्यापार	4.5	0.0	2.1
व्यवसाय की निरंतरता	27.2	0.0	12.7
iv. सामाजिक कारण			
शादी	0.0	53.5	28.5

परिवार प्रवासन	0.0	40.9	22.5
शैक्षिक उद्देश्य	4.5	0.0	2.1
स्वास्थ्य/इलाज की सुविधा	0.0	2.6	1.4
v. अन्य	2.9	0.0	0.7
कुल (i+ii+iii+iv+v)	100.0	100.0	100.0

डेटा के एक आगामी पार-वर्गीकरण से पता चलता है कि पुरुष प्रवासियों को अपेक्षाकृत छोटी उम्र में, अविवाहित रहने पर ही शहर की ओर 'भेज दिया' गया, और शहर की ओर जाने वाले उन लोगों के पास तुलनात्मक रूप से कम जमीन है। यही कारण है कि, शहरों की ओर भेजे गए उन पुरुषों के पास गांव में कम जमीन थे और इस प्रकार, दूर के स्थानों पर काम के लिए पलायन को आसानी से स्वीकार कर लिया जाता है। इसके विपरीत, कोलकाता की ओर भेजे गए पुरूष बेहतर रहे हैं और वे लोग केवल बेहतर अवसर के लिए विस्थापित हुए है। हालांकि, लोगों के बीच रोजगार के मुख्य एवेन्यू के रूप में स्व-रोजगार ही है, फिर भी यह उल्लेख किया गया है कि शहर की ओर भेजे गए पुरुषों के अपेक्षाकृत उच्च प्रतिशत नियमित वेतनभोगी नौकरियों में हैं। वे प्रवासी जिन्हें शहर की ओर भेजा गया वे शहर में अकेले चले गए थे। इसके विपरीत, शहर की ओर भेजे गए प्रवासियों का बड़ा अनुपात शहर परिवार के साथ रहते है, जिससेपता चलता है कि शहर में परिवार के साथ रहने वाले पुरुष बेहतर तरीके से रहते हैं। कोलकाता में पैर जमाने के बाद, वे अपने परिवारों को ले आए या पूरे परिवार के साथ रहने लगे। इन दो धाराओं के अलावा, अन्य रोजगार प्रयोजनों के लिए स्लम बस्ती में रहने वाले पुरूष मजबूरी में रहने वाले प्रवासियों की तरह लगते हैं (तालिका 5)।

तालिका 5: जनसांख्यिकीय, रोजगार के लिए आने वाले पुरुषों की सामाजिक-आर्थिक कारक

	रोजगार के उद्देश्य से आने वाले पुरुष			
चुने गए संकेतक	**पुश**	**पुल**	अन्य रोजगार कारण	सभी प्रवासी पुरुष
औसत आयु (वर्षों में)	31.1	37.9	32.9	34
वैवाहिक स्थिति				
अविवाहित	20.8	9.3	23.4	19.3
विवाहित	79.2	89.3	76.6	80.2
कुल	100	98.6	100	99.5

शैक्षिक मानक प्राप्त				
अशिक्षित	20.8	38.7	17.2	26.2
शिक्षित	79.2	61.3	82.8	73.8
कुल	100	100	100	100
औसत जमीन की जोत का आकार (हेक्टेयर में)	0.24	0.34	0.23	0.26
श्रमिक				
स्व-नियोजित	68.8	59.7	79.4	68.2
नियमित वेतनभोगी	2.1	15.3	0	7.7
मजदूरी	29.2	25.0	20.6	24.1

स्रोतः जनवरी-जुलाई, 2010 के फील्डवर्क के आधार पर

काम के लिए पुरुषों के बड़े पैमाने पर पलायन से सुविधाओं के प्रकार के बारे में भी अंतर्दृष्टि देते है जो उन्हें कोलकाता प्रदान कर रहा है। इस संदर्भ में यह उल्लेख करने की जरूरत है कि शहर में चेन प्रवास पीढ़ियों के माध्यम से काफी आम है- प्रवासी जिन्हें इस जगह से उनकी जान-पहचान के कारण भेजा गया, बुलाया गया या शहर में काम करने के लिए आ गए। इस प्रकार, वे कोलकाता पसंद करते हैं क्योंकि उन्हें इसके बारे में ज्ञात पर्यावरण ही नहीं बल्कि एक अज्ञात वातावरण में एक नए सेट अप बनाने की तुलना बेहतर लगा। लगभग 54, 47 और 55 प्रतिशत पुरुष जिन्हें इस उद्देश्य के लिए पसंदीदा कोलकाता के अन्य रोजगार श्रेणी के लिए ले जाया गया, भेजा गया वे स्वयं आ गए। इस के अलावा, इसके मुख्य कारण काम की एकाग्रता, सेवाओं, कच्चे माल की उपलब्धता के साथ ही तैयार उत्पादों के लिए कोलकाता को पसंदीदा बाजार का होना हैं। हालांकि, यह नोट करना काफी दिलचस्प है कि शहर में भेजे गए वाले उन पुरुषों को इस तरह के प्रोत्साहन (23 फीसदी) मिलते है, जबकि शहर में भेजे गए लोगों (15 फीसदी) अन्य रोजगार कारणों के लिए लाए गए लोगों को कम (15 फीसदी) प्रोत्साहन मिलता है। इसके अलावा, इस नगर को किसी अन्य मेगा शहर की तुलना में इसके अच्छे प्रशासन, सस्ते आजिवीका के लिए पसंद किया जाता है जो गरीब लोगों को विस्थापित करने और काम करने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करता है। इसी प्रकार, सांस्कृतिक समानता और जन्म स्थान के साथ वास्तविक निकटता उनके कार्यस्थल के रूप में इस शहर का चयन करने के लिए एक महत्वपूर्ण कारण है।

महिलाओं का एक बड़ा हिस्सा संबद्धात्मक प्रवासियों के रूप में शहर में चले गए हैं। उनका विस्थापन मुख्य रूप से शादी और परिवार के साथ पुनर्मिलन के लिए हुआ है। उदाहरण के लिए, आधे से अधिक महिला प्रवासी शादी के लिए अपना निवास स्थान बदले, जहां उन्हें शादी के बाद तुरंत लाया गया है। शेष लोग उत्पत्ति क्षेत्रों में कुछ देर के लिए रहने के बाद परिवार की रणनीति के एक भाग के रूप में शामिल हुए। साधारण परिवार के पुनर्मिलन की घटनाओं से विविधता का पता चलता है। महिलाओं को उनके पुरूष साथी की जरूरत और सुविधा के लिए गांव से बुलाया गया ताकि वे अपने एकल परिवार इकाई को बनाए रखे जिससे आजीविका खर्च कम हो सके और साथ ही वे खाना पकाने आदि में अपने पति की देखभाल कर सके।

प्रवासियों के श्रम बाजार की भागीदारी

चूंकि, यह अध्ययन स्लम बस्तियों में गरीब प्रवासियों के बारे में है, इसलिए उम्मीद है कि उन्हें अधिकाधिक रूप से शहरी अनौपचारिक क्षेत्रों में कार्यरत होने की संभावना है। इसका कारण यह है कि शहरों में तृतीयक गतिविधियों में संगठित क्षेत्र में रोजगार के लिए कुशल कार्यबल की आवश्यकता है जिनके पास औपचारिक शिक्षा हो, जिसका कि गरीब प्रवासियों का अभाव होता है। कौशल कारक के अलावा, गरीब प्रवासी शहरी इलाकों में लंबी अवधि के लिए बेरोजगार रहते हुए जीवन यापन की लागत का वहन नहीं कर सकते क्योंकि उनके ग्रामीण समकक्षों की तुलना में जीवन यापन का खर्च बहुत अधिक होता है। उसी प्रकार, सामाजिक संबंध और रिश्तेदारी का बंधन एक दीर्घकालिक वित्तीय सहायता का वादा नहीं करते है। इसके अलावा, ग्रामीण-शहरी पलायन दर में वृद्धि के साथ, शहरी क्षेत्रों में श्रमिकों की आपूर्ति आगे बढ़ती है। उच्च उत्पादकता के क्षेत्र में रोजगार की सीमित संभावनाओं के चलते, गरीब प्रवासियों अनौपचारिक अर्थव्यवस्था की कम उत्पादकता वाले क्षेत्रों में अवशिष्ट रूप से लीन हो जाते हैं। प्रवासी स्लम निवासियों के पास शारीरिक श्रम से कम या ज्यादा काम करने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं होता है (मित्रा 1994)।

एक पृष्ठभूमि के रूप में इस अवलोकन के साथ, अध्ययन में प्रवासियों के श्रम बाजार भागीदारी और उसके लिंगात्मक रचना का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र में कार्य भागीदारी दर

प्रवासियों के काम की भागीदारी में प्राथमिक और माध्यमिक काम का समावेश है। मुख्य काम जिसमें प्रवासी एक साल में अपेक्षाकृत लंबे समय अवधि के लिए लगे हुए हैं और अब अधिक घंटे समर्पित कर रहे हैं उसे प्राथमिक काम के रूप में नामित किया गया है। प्राथमिक काम के अलावा,

उत्तरदाताओं को आगे कहा गया है कि वे अन्य ऐसे काम हाथ में लें- जिसे मुख्य काम के साथ किया जा सकता है। इस तरह के काम कम समय अवधि के लिए या कम मांग वाले मौसम में दो से तीन महीने के लिए हो सकते हैं जब प्राथमिक काम में सुस्ती हो। ये माध्यमिक कामगार हैं। गरीब प्रवासियों द्वारा मुख्य रूप से तीन कारणों के लिए कई कार्यों को हाथ में ले लिया है: क. श्रम बाजार में अनिश्चितता; ख. शहर में रहन-सहन का उच्च लागत और ग. प्रेषण ताकि श्रमिकों को आम तौर पर उनके मूल क्षेत्रों के लिए भेजा है। कुल मिलाकर, पुरुषों और महिलाओं का क्रमशः 97 और 34 प्रतिशत भाग प्राथमिक स्थिति के श्रमिक है जबकि माध्यमिक काम में लगे हुए पुरुषों और महिलाओं के यही आंकड़े क्रमशः 18 और 4 प्रतिशत हैं। चूंकि, बहुत कम महिलाएं माध्यमिक स्थिति के काम करते हैं, इसलिए उनके श्रम बाजार भागीदारी का विस्तार से चर्चा नहीं है। केवल पुरुषों के माध्यमिक काम स्थितियों को ध्यान में रखा गया है। निम्नलिखित पैराग्राफ में प्रवासियों के श्रम बाजार भागीदारी का संक्षेप में उल्लेख किया गया है।

प्राथमिक और माध्यमिक कार्य

प्राथमिक काम को ध्यान में रखते हुए, यह देखा गया है कि पुरुषों के कार्यबल की भागीदारी महिलाओं की तुलना में काफी ज्यादा है। जैसाकि तर्क दिया गया है, स्थानिक गतिशीलता से कार्य बल भागीदारी दर बढ़ता है- यह अवलोकन पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए सही है। यह देखा गया है कि पूर्व प्रवास स्तर में, पुरुष कामगारों के आधे से कुछ कम श्रमिक होते थे; लगभग एक तिहाई के शिक्षा लेते थे और उनमें से दसवां विभिन्न अन्य गतिविधियों जैसे नौकरी की मांग में थे, शैक्षिक संस्थानों आदि में नहीं जाते थे। लेकिन, उनमें से लगभग सभी शहर में स्थानांतरण के बाद श्रम बाजार में प्रवेश कर लिए थे। इस प्रकार, जहां काम के लिए पलायन मुख्य मकसद होता है, वे शिक्षा या अन्य कार्य को बंद करके श्रम बाजार में प्रवेश करते थे। केवल दो मामलों में इन लोगों को पलायन के बाद भी शिक्षा जारी रखते हुए पाया गया। वे बहुत छोटी आयु वर्ग के हैं और इसके बेहतर शैक्षिक सुविधाओं के लिए कोलकाता की ओर आकर्षित हुए हो।

जैसा कि पहले ही बताया गया है, केवल 18 प्रतिशत पुरुष ही माध्यमिक स्थिति के कामगार हैं। इन लोगों में से लगभग उन सभी को शहर (89 फीसदी) में अकेले ले आए, जो ग्रामीण क्षेत्रों से मुख्य रूप से पलायन हुए और सीमांत किसान हैं।

हालांकि कुछ ही महिलाएं शहर में जाने के लिए कारण के रूप में रोजगार प्राप्त करती हैं, उनके बाद पलायन कार्य की स्थिति के विपरीत दावा करती हैं। यही कारण है कि उनका वास्तविक श्रम बाजार

भागीदारी उक्त कारणों की तुलना में अधिक है। वर्तमान अध्ययन से इस तथ्य की पुष्टि होती है: कुल मिलाकर 3 प्रतिशत महिलाएं काम प्रयोजनों के लिए बाहर जाती है, जबकि एक चौथाई महिलाएं प्रवास से पहले कामगार होती है जो शहर में स्थानांतरित होने बाद बढ़कर एक तिहाई से अधिक हो गया (तालिका 4क)।

हालांकि, यह व्यापक रूप से बनाई गई धारणा है कि गरीब महिलाएं अपने परिवार की सहायता करने के लिए काम करेंगी, रिश्ते हमेशा कारगर नहीं होते हैं और गरीब होने के बावजूद महिलाएं परिवार संबंधी प्रतिबंध और धार्मिक कट्टरपंथियों आदि के आधार पर श्रम बाजार से बाहर रह सकती हैं (दास 2006; उल्लाह 2007)। महिलाओं की काम शक्ति की भागीदारी पति, ससुराल से स्वीकृति, भुगतान योग्य कार्य के सामाजिक-धार्मिक कलंक से जुड़े होने के कारण प्रतिबंधित होते हैं। इससे महिलाएं सामाजिक संस्था के रूप में परिवार को बनाए रखने की भूमिका में डाल देते है जबकि आर्थिक पहचान, निर्णय लेने की शक्तियां और आर्थिक नियंत्रण पुरुषों के हाथ में सौंपा दिया जाता है। आम धारणा यह है कि- 'पति की कमाई परिवार को चलाने के लिए पर्याप्त होता है'– जिससे इन महिलाओं की कार्यबल भागीदारी दर के खिलाफ होता है। इसके अलावा, परिवार के सम्मान के रक्षक के रूप में पर्दा प्रथा की मूल धारणा जो महिलाओं की शील संचालित करने के लिए माना गया है; यह माना जाता है कि महिलाओं को उनके परिजनों पर शर्म से बचाना सुनिश्चित करने के लिए उनपर लगातार निगरानी रखना आवश्यक है' (सीले एट अल 2006:173)। एक महिला द्वारा इस तरह की वास्तविकता प्रतीकात्मक रूप से लाई जाती है- 'यह परिवार के लिए शर्म की बात है कि महिलाओं को काम करने के लिए बाहर जाना पढ़े'। इस प्रकार काम के लिए घर से बाहर जाने से रोका जाता है और महिलाओं को आमतौर पर घर आधारित काम जिसके लिए कम पैसे मिलते है, करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है (खान 2007)।

कार्य स्थिति

प्राथमिक कार्य की स्थिति स्वरोजगार, नियमित वेतनभोगी और मजदूरी के रूप में वर्गीकृत किया गया है। स्व-रोजगार में स्वयं के खाते, नियोक्ताओं और अवैतनिक मजदूर भी शामिल है,[11] नियमित वेतनभोगी कर्मचारी वे हैं जो किसी भी व्यवसाय में स्थायी रूप से कार्यरत हैं और मजदूरी श्रमिकों में वे व्यक्ति शामिल है जो अनियमित रूप से श्रम बाजार में रखे गए हैं। लेकिन, उत्तरदाता 'नौकरी

[11] यद्यपि, अवैतनिक परिवार माध्यमिक कार्य की स्थिति के दायरे में काम करते है, जहां रह रह कर काम मिलता है। लेकिन अवैतनिक परिवार सहायकों के काम के घंटे की जांच से पता चलता है कि महिलाओं को अपने पुरुषों समकक्षों की मदद करने में बहुत लंबा समय देना होता हैं। इस वजह से उन्हें प्राथमिक श्रमिकों के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

प्रकार में बहुत ज्यादा अंतर नहीं है; केवल काम के दिनों की संख्या में अपवाद है। यही कारण है कि, नियमित वेतनभोगी नौकरियों में पुरुषों को स्थायी रूप से रखा जाता है इसके विपरित मजदूरी श्रमिक है जो रूक-रूक कर काम पाते हैं। इस व्यापक वर्गीकरण के साथ, कार्य की स्थिति को प्रवास अवधि के पहले और बाद दोनों पर नीचे चर्चा की गई है (तालिका 6)।

पूर्व प्रवास की अवधि में, स्व-रोजगार विशेष रूप से लोगों के बीच रोजगार के मुख्य अवसर के रूप में उभर कर आया। पुरुषों का लगभग एक तिहाई भाग वेतनभोगी मजदूर थे। नियमित वेतनभोगी कर्मचारियों काफी असामान्य हैं। प्रवास के बाद की अवधि कार्य की स्थिति के विचलन को दर्शाती है। हालांकि, स्व-रोजगार पुरुषों के लिए प्रधान प्रवेश बिंदु के रूप में कायम है, नियोक्ताओं के उद्भव से पता चलता है कि ये लोग अपने लिए छोटे व्यवसाय स्थापित करने में सफल थे और पीक सीजन में मजदूरों को अस्थायी रूप से किराए पर रखते हैं। अवैतनिक श्रम परिवार लगभग समाप्त हो गया है- इससे संकेत मिलता है कि पुरुषों के श्रम को हमेशा भुगतान किया जाता है, विशेष रूप से जब वे काम के लिए पलायन करते है। नियमित वेतनभोगी काम में वृद्धि पुरुषों के बीच बहुत ही नगण्य है।

जहां तक महिलाओं के श्रम बाजार भागीदारी का प्रश्न है, आधे से अधिक स्वरोजगार है और मुख्य रूप से उनके स्वयं के खाते है और अवैतनिक श्रम परिवार है। महिलाओं के बीच नियमित वेतनभोगी नौकरियां काफी असामान्य थे और उनमें से एक बड़ा हिस्सा वेतन मजदूर थे। पुरुषों की तरह महिलाओं ने भी कोलकाता में स्थानांतरित होने के बाद कार्य की स्थिति में बदलाव का अनुभव किया। शहरी श्रम बाजार में महिलाएं ने स्वरोजगार श्रमिकों के रूप में प्रवेश पाती हैं। स्वरोजगार के तहत अवैतनिक सहयोगकर्ता की संख्या में वृद्धि हुई है जिससे पता चलता है कि गरीब महिलाएं किराए पर लिए गए श्रमिक (अतिरिक्त) के एवज में अपने पति की मदद करने के लिए उन्हें सहायता प्रदान करती हैं ताकि वे छोटे कार्य से अधिकतम लाभ ले सके (सेन 2004)। जहां तक 'अवैतनिक श्रम परिवार' के रूप में श्रमिकों के सामान्य वर्गीकरण का संबंध है, कई वैचारिक प्रश्न उभर कर सामने आते हैं। यह देखा जाएगा कि इस तथाकथित परिवार श्रम सामान्यतः लगभग 5.2 घंटे/दिन होते हैं जिसका भुगतान नहीं किया जाता है। महिलाओं के साथ उनका सामना विशेष रूप से चिंताजनक है। यही कारण है, महिलाओं के अवैतनिक सहायक होने पर भी उनके काम के घंटों में लचीलापन है, जो घरेलू कार्यों के साथ-साथ दिन भर तक चलता रहता है।

तालिका 6: पलायन पूर्व एवं उपरान्त कार्य स्थिति

	पुरूष		महिला	
कार्य स्थिति	पूर्व	बाद में	पूर्व	बाद में
i. स्व नियोजित				
क) स्वयं के श्रमिक/साझेदारी/आश्रित उप ठेका श्रमिक	55.1	45.1	46.4	39.2
ख) नियोक्ता	0.0	22.1	0.0	1.3
ग) अवैतनिक परिवार हेल्पर	4.1	1.0	10.7	22.8
कुल (क+ख+ग)	59.2	68.2	57.1	63.3
ii. नियमित वेतनभोगी	7.1	7.7	5.4	35.4
iii. मजदूरी श्रम	33.7	24.1	37.5	1.3
कुल (i + ii + iii)	100.0	100.0	100.0	100.0

स्रोतः जनवरी-जुलाई, 2010 के फील्डवर्क के आधार पर

इसी दौरान, नियमित वैतनिक नौकरियां भी कुछ हद तक पलायन-उपरान्त अवधि में कुछ आमूल-चूल बढ़ोतरी दर्शाती हैं कि शहर उन्हें ज्यादा आश्वस्त प्रकार का रोजगार प्रदान करती हैं। हालांकि, उन महिलाओं के रोजगार के अवसरों के संबंध में वास्तविक निष्कर्षों पर पहुंचाया जाना बहुत ही महत्वपूर्ण है, जो कि सबसे आश्वस्त प्रकार के कार्यों में संलग्न हैं।

पलायन करने वालों को आगे उनकी कार्य स्थिति के आधार पर विगत संदर्भ वर्ष के दौरान उनके द्वारा किए गए कार्यदिवसों की संख्या के अनुसार क्रॉस-वर्गीकृत किया गया है। अध्ययन यह दर्शाता है कि पलायन ने औसत कार्य दिवसों की संख्या में बढ़ोतरी की है- पुरूष और महिलाएं दोनों के बीच जहां किसी वर्ष के दौरान पुरूषों को महिलाओं द्वारा कुल किए गए कार्य दिवसों (259 दिन) की तुलना में अधिक संख्या के दिनों (280 दिन) हेतु रोजगार उपलब्ध होता है। नियमित वेतनभोगी नौकरियां वर्ष के ज्यादातर हिस्से के लिए रोजगार प्रदान करती हैं और महिलाओं द्वारा किए गए कार्य दिवसों (343) की संख्या पुरूषों की तुलना में अधिक हैं। यह सुझाव देता है कि नियमित वेतनभोगी पुरूष कारखानों, कार्यालयों इत्यादि में रोजगार प्राप्त हैं जहां वे छुट्टियों/अवकाशों के हकदार होते हैं। लेकिन, घरेलू कामगार के तौर पर उनके नियुक्त किए जाने की वजह से, नियमित तौर पर वेतनभोगी महिला पलायनकर्ता न्यूनतम तौर पर वैतनिक अवकाश तथा अन्य सुरक्षा लाभों का फायदा ले पाती हैं। इससे

उनके द्वारा किए गए कार्य दिवसों की संख्या में बढ़ोतरी होती है। किए गए कार्य दिवसों में बढ़ोतरी को ज्यादातर पुरूष मजदूरी श्रमिकों के बीच प्रमुखता से देखा गया है (पलायन पूर्व अवधि के 123 दिनों की तुलना में पलायन उपरान्त अवधि के 248 दिनों में)। पलायन पूर्व अवधि में, ज्यादातर मजदूरी श्रमिक कृषि कार्यों में संलग्न थे जो उन्हें मौसमी कार्य प्रदान करते हैं जबकि महानगरों में वृहद अवसर उन्हें विविध कार्य का आधार प्रदान करते हैं चाहे वह दैनिक कार्य ही क्यों न हो, जैसे कि निर्माण तथा सिर पर ढोने का कार्य इत्यादि।

कार्य का प्रकार

पलायन पूर्व अवधि में ज्यादातर स्वरोजगार प्राप्त पुरूष स्वयं के खेतों में फसल उगाने वाले किसान होने के साथ-साथ एक अवैतनिक सहायक भी थे (91.2 प्रतिशत)। चूंकि, रोजगार के अन्य अवसर ग्रामीण परिवेश में दुर्लभ हैं, उनमें से बहुत ही कम लोग विनिर्माण के कार्यों में संलग्न होते हैं जैसे कि बढ़ईगिरी, प्रिंटिंग तथा बाइंडिंग (3.5 प्रतिशत)। जबकि थोक एवं फुटकर व्यवसाय में, पुरूष जानवरों के व्यवसाय, अनाज व खाने-पीने की दुकानों तथा कपड़े बेचने में संलग्न होते हैं (5.3 प्रतिशत)।

यद्यपि नियमित वेतनभोगी नौकरियां पलायन पूर्व अवधि में असामान्य होती हैं, आधे से अधिक कारखानों तथा एक-दहाई से अधिक लोग बिक्री और फुटकर सेवाओं में रोजगार प्राप्त थे। दैनिक मजदूर के तौर पर, कृषि ने पुरूषों की एक बड़ी मात्रा को आकर्षित किए रखा (67.6 प्रतिशत) जिसके बाद मोचियों की संख्या आती है (14.3 प्रतिशत)।

चूंकि, शहर कृषि गतिविधियों के लिए कोई भी कार्यक्षेत्र प्रदान नहीं करता है, कृषि श्रमिक का अस्तित्व ही समाप्त हो गया और एक पूर्णरूपेण बदलाव कृषि आधारित से गैर-कृषि क्षेत्रों में देखा गया है। विनिर्माण (76 प्रतिशत), फुटकर व्यवसाय (13.2 प्रतिशत), परिवहन (7 प्रतिशत) इत्यादि सबसे प्रमुख और प्रारंभिक प्रवेश बिन्दु के तौर पर पलायनकर्ताओं के लिए उभर कर सामने आते हैं, भले ही कुछ व्यवसाय बड़ी संख्या में पलायनकर्ताओं को स्वरोजगार प्राप्त मजदूरी श्रमिकों के रूप में नियोजित करते हैं। जूते-चप्पल बनाना और पशुओं का व्यवसाय ऐसे दो पेशे हैं। यहां, श्रमिक स्वयं का कार्य करने वाले तथा नियोक्ता के तौर पर विद्यमान होता है। साथ ही साथ, ऐसे भी श्रमिक होते हैं जिन्हें पूरे वर्ष/विशेष अवधि के लिए नियुक्त किया जाता है, जो कि कार्य की मौसमी आवश्यकता और साप्ताहिक तौर पर भुगतान के आधार पर होता है। ये दो व्यवसाय झुग्गियों तथा इसमें रहने वालों के एक बड़े हिस्से को शामिल करते हैं। उदाहरण के लिए, विनिर्माण में संलग्न कुल स्वरोजगार श्रमिकों में से 97 प्रतिशत लोग चर्मकार अथवा मोची हैं। इसी प्रकार, विनिर्माण में कुल मजदूरी श्रमिकों में से 75 प्रतिशत कार्य उक्त पेशे में शामिल है। ऐसे ही थोक तथा फुटकर व्यवसाय बड़ी संख्या में स्वरोजगार

प्राप्त तथा मजदूरी श्रमिकों को संलग्न करता है। ये पुरूष जानवरों के व्यवसाय, पशुओं के चमड़े और खालों के कार्य में संलग्न हैं। ये व्यवसाय न केवल बड़ी मात्रा में पलायनकर्ताओं को संलग्न करते हैं बल्कि अधिक कार्य घंटों को भी शामिल करते हैं। उदाहरण के लिए, मोची के लिए औसत कार्य घंटों की अवधि 16 घंटे/दिन है, जबकि जानवर बेचने वाले लगभग 12 घंटे कार्य करते हैं। इन दो व्यवसायों के अलावा, स्वरोजगार प्राप्त पुरूष परिवहन में भी संलग्न होते हैं, छोटे होटलों, फास्ट फूड बेचने वालों इत्यादि में (मुखोपाध्याय 1998; सुब्रमण्यम 2001; डे एंड दासगुप्ता 2009)।

नियमित वेतनभोगी श्रमिकों में शामिल हैं विभिन्न प्रकार के बिक्रीकर्ता - जो शो रूम्स, मीट शॉप इत्यादि में कार्य करते हैं (35.3 प्रतिशत)। इसके अतिरिक्त, विनिर्माण क्षेत्र भी काफी अच्छी संख्या में लोगों को रोजगार प्रदान करता है जिसमें विभिन्न प्रकार के छोटे-मोटे कार्य शामिल हैं जैसे लेदर, प्रिंटिंग, बाइडिंग, छोटे प्रकाशन कार्य इत्यादि (23.5 प्रतिशत)। जबकि परिवहन क्षेत्र में लोगों को कार चालकों (17.6 प्रतिशत) के तौर पर संलग्न किया जाता है। शेष बचे पुरूष नियमित वेतनभोगी नौकरियों में हैं या तो सरकार या फिर निजी क्षेत्रों में (11.8 प्रतिशत)।

जहां तक महिला पलायनकर्ताओं की बात है, यह पाया गया है कि उनके रोजगार के अवसर पुरूषों की तुलना में काफी सीमित हैं। फिर भी पलायन उपरान्त उनका प्रदर्शन काफी विविध रोजगार अवसरों को प्रदर्शित करता है, इसके बावजूद, वे कुछ चयनित प्रकार के पेशों तक ही सीमित हैं जिन्हें प्रमुखता से 'महिलाओं के लिए' ही परिभाषित किया जा सकता है। पलायन पूर्व अवधि में, स्वरोजगार प्राप्त महिलाएं स्वयं के खेतों में किसानों तथा अवैतनिक सहायकों के तौर पर कार्य करती थीं (43.8 प्रतिशत)। इसके अतिरिक्त, कुछ महिलाएं थोक एवं फुटकर व्यापार के क्षेत्र में भी फल/सब्जी बेचनेवाले (12 प्रतिशत) का कार्य करती हैं। छोटे मोट विनिर्माण जैसे कि पर्स/बैग बनाना, जरी, कढ़ाई कार्य, बीड़ी रोलिंग और अगरबत्ती बनाने के क्षेत्र में लगभग 50 प्रतिशत महिला संलग्न हैं।

जैसा कि उपर इंगित किया गया है, नियमित नौकरी ग्रामीण क्षेत्रों में पुरूषों और महिलाओं, दोनों के लिए बहुत ही विरल होते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में कुछ महिलाए कारखानों में चूड़ियां बनाने तथा अन्य विविध विनिर्माण कार्य में लगी हुई हैं (66.7 प्रतिशत)। अंत में मजदूरी श्रमिक के तौर पर ज्यादातर महिलाए कृषि क्षेत्र में लगी हुई थीं (95.8 प्रतिशत)।

पुरूषों की तरह ही, पलायन उपरान्त अवधि महिलाओं के लिए विभिन्न रोजगार के अवसर प्रदान करता है। स्वरोजगार प्राप्त के तौर पर वे अवैतनिक सहायकों के रूप में अपने पति के साथ कार्य करती हैं अथवा एक आश्रित उप-ठेका कार्यकर्ता के तौर पर, जहां उन्हें कुछ भुगतान भी किया जाता

है। जैसा कि पूर्व में ही इंगित किया जा चुका है वे जूते के फीते बनाने, सिलाई, दर्जीगिरी, कताई और धागों की कटिंग इत्यादि कार्य में लगी हुई हैं (58 प्रतिशत)। होटल और रेस्टोरेंन्ट में वे अपने पति के साथ उनके छोटे होटलों/घरेलू कैंटीन में एक अवैतनिक सहायक के तौर पर कार्य करती हैं जबकि अन्य मामलों में वे एक सक्रिय भागीदार के तौर पर श्रम बाजार में भोजन बेचने वाले के रूप में कार्य करती हैं (10 प्रतिशत)। थोक और फुटकर व्यापार में महिलाएं प्रमुख तौर पर अवैतनिक सहायक के रूप में अनाज की दुकानों तथा अन्य खुदरा दुकानों में संलग्न हैं (12 प्रतिशत)। इसके अलावा, एक चौथाई से केवल कुछ कम महिलाएं कुछ प्राथमिक पेशों में संलग्न हैं जैसे पेपर के थैले व पैकेट्स बनाना, पेपर अलग करना इत्यादि। ऐसे कार्य बहुत ही दोहराव वाले होते हैं, और इन्हें घर पर किया जा सकता है तथा इसके किसी विशेष हुनर की जरूरत नहीं होती है। ऐसे कार्यों में आपूर्ति और मांग, दोनों ही समान तौर पर सम्मिलित होते हैं। एक ओर, जिस तरह गरीब महिलाएं सस्ते और विनम्र श्रम के स्रोत हैं, उन्हें इस प्रकार के छोटे-मोटे कार्य ही सौंपे जाते हैं। दूसरी ओर, ये छोटे पैमाने के कार्य उन्हें अत्यंत कम आमदनी प्रदान करते हैं, जो उनके परिवार की आय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनता है।

नियमित वेतनभोगी कार्य महिलाओं में सामान्य है। हालांकि, वे प्रमुख तौर पर घरेलू कार्यों में संलग्न होती हैं (70.4 प्रतिशत)। इस प्रकार के कार्य, जो कि गांवों में असामान्य माने जाते हैं, शहरों में गरीब तथा अशिक्षित महिलाओं के लिए रोजगार में सुलभ प्रवेश का साधन बनते हैं, जैसा कि ये प्रमुख तौर पर घर के कार्य ही होते हैं और इसमें किसी विशेष कौशल और शिक्षा स्तर की जरूरत नहीं होती है (गुलाटी 1997, 2006; नीता 2011)।

द्वितीयक व्यवसाय के लिए पुरुष पलायन से एक दिलचस्प लक्षण का पता चलता है- 75 प्रतिशत से भी ज्यादा पुरुष, विशेषतः जो अकेले शहर में आये हैं वे गांव में किसान या कृषि मजदूर थे। ये पुरुष अपने स्थान से कोलकाता तक आना जाना करते थे जिससे वे कृषि मौसम के दौरान अपने मूल स्थानों पर लौट आते थे। इस प्रकार का कृत्य अधिकांशतः चमड़े का काम करने वालों के बीच देखा गया जहां जूते बनाने का काम मानसून के दौरान शहर में नही किया जा सकता है। ऐसा करने से, शेष बेरोजगारी का जोखिम बंट जाता है एवं गांव के साथ जुड़ाव नही रखता है। इसलिए, ये लोग अधिक अस्थायी पलायन को प्रस्तुत करते है जहां शहर एवं गांव दोनों उन्हें आजीविका के विकल्प प्रदान करता है। (डी हान 2000; मेन्डोला 2006; कोर्रा 2011)। इसके अलावा, अन्य प्रवासी मजदूर अन्य कामों में मोची, बीमा अभिकर्ता, पशु बिक्री, जूते बेचने वाले, फास्ट फूड बेचने वाले आदि के रूप में लगे हुए हैं।

पूर्व और बाद में व्यावसायिक गतिशीलता- प्रवासन अवधि

ज्यादातर पलायन के पूर्व व पश्चात की अवधि में व्यावसायिक गतिशीलता के बारे में बात की गई। अक्सर यह तर्क दिया जाता है कि व्यावसायिक गतिशीलता का अनुभव पुरुषों के लिए सकारात्मक है जबकि यह महिलाओं के लिए नकारात्मक होता है अर्थात उनका पलायन के बाद के काम की स्थिति पलायन के पहले की स्थिति के समान नही है (ओगाया 2006)।

वर्तमान अध्ययन में, 49 प्रतिशत पुरुष ऐसे है जो पलायन के पहले एवं बाद दोनों में काम करते हैं। पलायन के पूर्व एवं बाद में अपनी स्थिति को मजदूर के रूप में रखने वाले कुल मजदूरों में से लगभग तीन चौथाई कृषि में, 15 प्रतिशत विनिर्माण, 5 प्रतिशत खुदरा व्यवसाय, 2 प्रतिशत अन्य सेवाओं एवं 1 प्रतिशत निर्माण गतिविधियों में लगे हुए है। पलायन के बाद की अवधि में उनके लिए रोजगार का प्रमुख स्रोत छोटा मोटा विनिर्माण है। इसके अतिरिक्त, विनिर्माण क्षेत्र खुदरा व्यवसाय, निर्माण एवं अन्य सेवाओं से भी मजदूरों को सम्मिलित करता है। इसके अलावा विनिर्माण से अन्य क्षेत्रों मे स्थनान्तरण ऐसी जगह पर करता है जहां मजदूर समान व्यवसाय में है। उदाहरण के लिए, विनिर्माण के अंदर, ज्यादातर मोची समान प्रकार के व्यवसाय को जारी रखता है। श्रमिको का बहुत ही नगण्य अनुपात खुदरा व्यवसाय में लगा हुआ है। विनिर्माण के समान ही, कुछ लोग जो खुदरा व्यापार में लगे हुए हैं विशेष तौर पर पशुओं एवं किराने की दुकान चलाने वाले आदि लोग ऐसा करना जारी रखते हैं। (चित्र 4)

पुरुषों के समान ही, महिलाएं भी एक व्यवसाय से दूसरे व्यवसाय में स्थानान्तरित हो जाती हैं। पलायन के पूर्व की अवधि में 68 प्रतिशत महिलाएं कृषि में होती हैं, 23 प्रतिशत विनिर्माण में, 5 प्रतिशत शिक्षा एवं स्वास्थ्य क्षेत्र में होती हैं। पलायन के बाद की अवधि में महिलाओं के लिए रोजगार के दो मुख्य रास्तों का पता चलता हैः विनिर्माण एवं निजी परिवारों में घरेलू सहायता एवं अन्य सेवाओं के लिए काम। पलायन के बाद कृषि मजदूरी करने वाली महिलाओं का बड़ा हिस्सा इन क्षेत्रों में स्थानान्तरित हो जाता है। हालांकि, विनिर्माण में लगने वाली महिलाएं पहले भी समान क्षेत्र में थीं, जबकि बाकी की शिक्षा (प्राइवेट ट्यूटर) एवं कृषि क्षेत्र (कृषि मजदूर) से निकलते हैं। ये महिलाएं कौशल की बहुत ही कम आवश्यकता वाले काम जैसे जूते की लैस, सिलाई, कढाई आदि में लगी हुई हैं। जैसा कि पहले बताया गया है, कृषि कार्य में वर्ष भर में 30-45 दिनों तक काम करने की तुलना में शहर में घरेलू नौकरानी के रूप में कार्य करना महिलाओं के लिए नियमित रोजगार प्रदान रोजगार के नये अवसर सृजित कर तुलनात्मक रूप से आय का सुरक्षित साधन प्रकट करता है (चित्र 5)। फिर भी यह स्थानान्तरण व्यावयायिक गतिशीलता के उतार-चढ़ाव को जांचने के लिए मुश्किल बनाता है

क्योंकि ज्यादातर मामलों में कार्य की परिस्थिति अलग-अलग होती है। हालांकि, प्रवासियों ने यह बताया कि, ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में कैसे शहर का जीवन काम एवं आय के अच्छे अवसर के साथ ही साथ काम के संबंध में सौहाद्रपूर्ण वातावरण लाता है। यह अनिवार्य है क्योंकि गांव के संदर्भ में, अक्सर कोई भी व्यक्ति लगातार दबाब के तहत काम की सीमाओं से धब्बे लगने का सोचता है। (राजू एवं बागची 1993)। समस्तीपुर, बिहार से एक महिला प्रवासी ने बताया, *'सूरज की रोशनी में खेत में 12-13 घंटे काम करना मेरे लिए वास्तव में बहुत ही मुश्किल है जबकि शहर में घर के अंदर घरेलू सहायक के रूप में कार्य करना ज्यादा सहज है। इसके अलावा काम करने के घंटे भी निर्धारित हैं।'*

शहर में कार्य की स्थिति एवं निवास अवधि के बीच आपसी संबंध

शहर में कार्य की स्थिति एवं निवास अवधि के बीच आपसी संबंध की बात करें तो, अध्ययन बताता है कि नियमित वेतनभोगी पुरुषों के लिए रहने की औसत अवधि स्वरोजगार एवं मजदूरी वाले श्रमिको की 16 एवं 13 वर्ष की तुलना में लगभग 18 साल है। महिलाओं के लिए इस प्रकार की कोई पद्धति नही पायी जाती है, फिर भी वेतनभोगी एवं मजदूरी श्रमिक (औसत अवधि 14 एवं 12 साल) की तुलना में स्वयं का रोजगार करने वाली महिलाओं की शहर में रहने की औसत अवधि 16 वर्ष है। यह संभव है कि पूर्व में युवा महिलाओं को रोजगार की तलाश करने की तुलना में वर्तमान में अधिक प्रकार की नौकरियों उपलब्ध हैं जबकि रहने की अवधि के बढ़ने के साथ बड़ी उम्र की महिलाएं काम की बदलती स्थिति का अनुभव नही हो सकता है। (बर्धान 1989)- एक प्रस्ताव जिसको यहां पर नही लिया है उसको आगे सिद्ध करने की आवश्यकता है।

चित्र 4: पुरुष श्रमिकों की सतत व्यावसायिक गतिशीलता

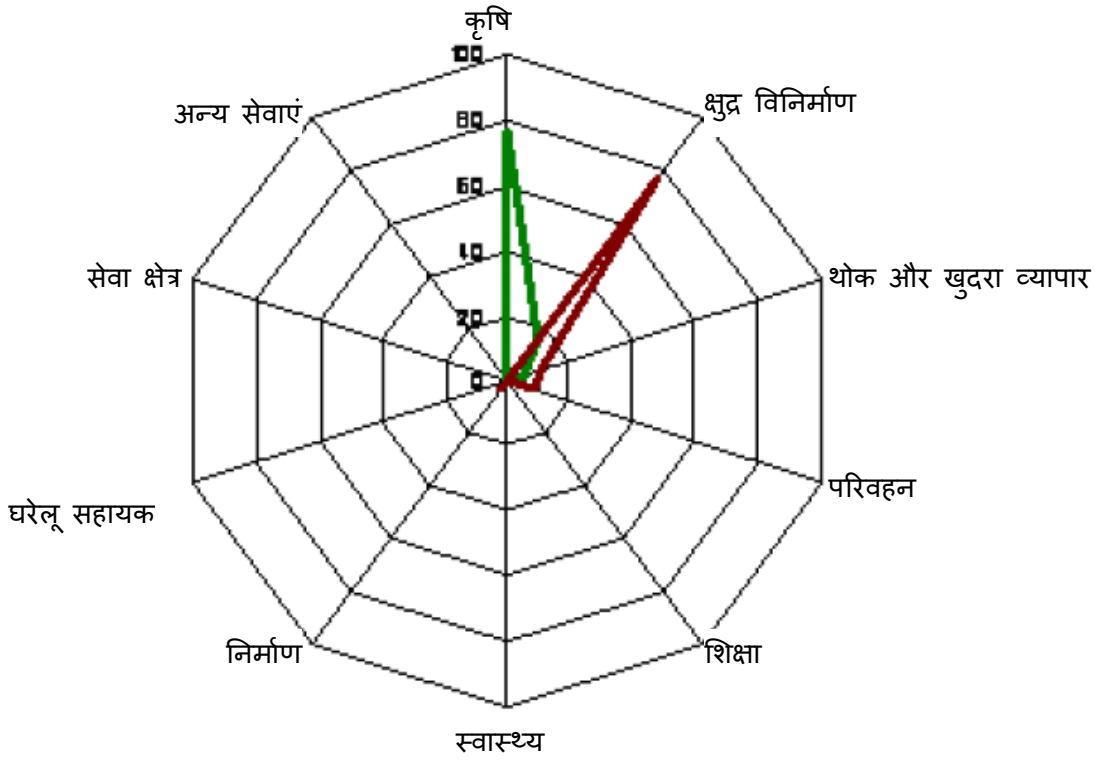

चित्र 5: महिला श्रमिकों की सतत व्यावसायिक गतिशीलता

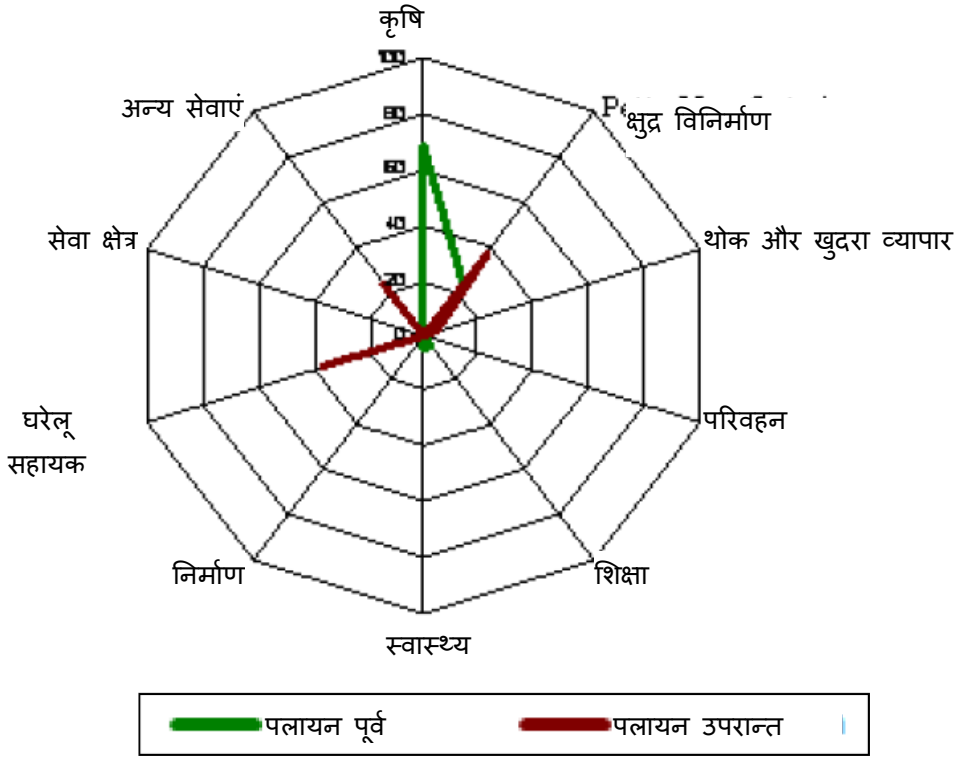

इस पर बहस हुई थी कि जैसे ही निवास करने की अवधि बढ़ती है, सामान्य तौर पर पुरुष अपेक्षाकृत सुरक्षित रोजगार एवं आय की दिशा में गतिशीलता हासिल करते हैं (लिंगम 1998)। इसके अलावा, जैसा कि मजूमदार द्वारा तर्क दिया गया है (1987) मजदूरी श्रमिक की तुलना में निवासी के लिए स्वयं के रोजगार के काम में अनौपचारिक क्षेत्र की प्रविष्टि भी आसान नही हो सकती है और स्वयं की दुकान या व्यापार स्थापित करने के लिए संबंधित उच्च वेतन से बनाई गयी अपनी बचत का निवेश भी करना पड़ सकता है। हालांकि, कैसे स्वयं का रोजगार करने वाला प्रवासी अपनी दुकान एवं व्यापार को स्थापित करने के लिए अपनी बचत का निवेश करता है ये वर्तमान अध्ययन के दायरे से बाहर है, उनकी उम्र की जांच से पता चलता है कि स्वरोजगार पुरुष मजदूरी वाले श्रमिकों से अधिक पुराने होते हैं।

कार्य की स्थिति, कार्य का स्थल एवं रूपान्तरित दूरी के बीच आपसी संबंध

77 प्रतिशत पुरुषों की तुलना में लगभग 90 प्रतिशत स्वरोजगार महिला श्रमिक घर से काम करती हैं। इन घर से काम करने वाली महिला श्रमिकों में से ज्यादातर अपने पतियों के लिए अवैतनिक सहायक या 'उप-अनुबंध श्रमिकों की अधीनस्थ' होती हैं (चेन एट अल 1999: 605)[12]। वे जूतों की लैस बनाने, कागज की प्लेट बनाने एवं गिनती और पैकिंग के कुछ प्राथमिक व्यवसाय जैसे छोटे मोटे विनिर्माण में लगी हुई हैं। परिवार से दूर अधिकांशतः महिलाएं घरेलू सहायक एवं फैक्टरी मजदूर होती हैं।

घरेलू जिम्मेदारियों के कारण न केवल महिलाएं घर के अंदर काम करती हैं कई व्यवसाय हैं जो घर के अंदर किए जातें हैं जिनमें बड़ी संख्या में पुरुष भी संलग्न हैं- 'प्राइवेट' एवं 'सामुदायिक' अस्पष्टताओं के बीच विभाजन करना। इसके अलावा, अक्सर झुग्गीवासी काम करने की अलग से जगह नही जुटा पाते हैं एवं कुछ व्यवसाय (जैसे जूते बनाना, सूक्ष्म स्तर पर बैग बनाना आदि) घर के अंदर ही चालू रखते हैं। इसके विपरीत, कुछ व्यवसाय ऐसे हैं जिनको अलग से स्थान की आवश्यकता पड़ती है (धातु से संबंधित, कार के गीअर एवं बैट्री, टीन के डब्बे बनाना आदि) एवं अन्य जैसे वेन्डिंग, फास्ट फूड बेचना, ड्राइविंग आदि खुले स्थानों/गलियों में चलाए जा सकते हैं।

---

[12] आवास आधारित काम की वांछनीयता के बारे में विरोधी विचार दो परस्पर विरोधाभासी सिद्धान्तों से पैदा होते हैं। पहला सिद्धान्त दर्शाता हैं कि आवास पर कार्य करने वाले श्रमिक अपेक्षाकृत व्यक्तियों की अधिक सुविधा वाला समूह है जो ज्यादा नम्यता और अपने को नियंत्रित करने के लिए आवास से काम करने को चुनते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार, आवास से काम करना परिवार के सदस्यों को बच्चों/बूढ़े/अपाहिजों की देखभाल करने की अनुमति देता है। इसलिए इन घरेलू कामगारों को अनुषंगी लाभ त्यागना महत्वपूर्ण नही माना जाता है क्योंकि आमतौर पर वे इस प्रकार के लाभ अपने जीवन साथी के नियोक्ताओं से प्राप्त कर लेते हैं। अन्य सिद्वान्त चित्रित करता है कि आवास श्रमिक शोषण समूह के रूप में कम मजदूरी पर कुछ लाभों के साथ काम करने की बुरी स्थिति में कार्य कर रहें हैं और अक्सर अनुपूरक श्रम के लिए बच्चों पर निर्भर रहते है। (एडवर्ट्स और फील्ड-हेन्द्री 1996)

जो घर में काम करने वाले लोग है या जिनका कोई निश्चित कार्यस्थल नही हैं उनकी तुलना में घर और कार्यस्थल के बीच की दूरी उन लोगों के बहुत अर्थपूर्ण है जो प्रतिदिन अपने घर एवं कार्य स्थल के बीच में एक निश्चित दूरी की यात्रा करते हैं[13]। हालांकि जो बाहर काम करते हैं, घर से बाहर होते हैं, उनके आवास से एक किमी के अंदर काम करना पसंद करते हैं, दूरी बढ़ते ही काम करने की आवृति कम होती जाती है। इसीलिए, झुग्गीवासी लम्बी दूरी के लिए यात्रा नही करते हैं- वे अपने आवास के पास रोजगार तलाशते हैं (नाम्बियार 1965 ने उद्धृत किया ब्रुइजीने और शेड्क 1992 से)।[14]

जो अपने निवास स्थान से 1 किमी. के अंदर काम करते हैं उनके लिए चलना मुख्य विकल्प है। इस प्रकार की दूरी के लिए 2-15 मिनट तक का समय लगता है। यद्यपि, कभी-कभी पलायन करने वाले 2-5 किमी तक की लम्बी दूरी भी पैदल चलकर तय करते हैं। अधिक लम्बी की दूरी के लिए पलायन करने वाले अपने कार्यस्थल तक पहुंचने के लिए ऑटो, रिक्शा, वैन आदि के द्वारा यात्रा करते हैं। (तालिका 7)

तालिका 7: यात्रा की दूरी, यात्रा का साधन एवं यात्रा के लिए लिया गया समय

कार्यस्थल का स्थान	*प्रवासियों का प्रतिशत*	यात्रा का साधन	यात्रा के लिए लिया गया समय (मिनट में)	
			रेंज	**औसत**
पुरूष				
कम से कम 1 किमी के बराबर	40.4	घूमना (वॉकिंग)	2-15	5.4
2 से 5 किमी	21.1	वॉकिंग/बाइसाइकिल/स्कूटर/ऑटो/बस	10-30	13.8
5 किमी से ज्यादा	5.3	स्कूटर/ऑटो/बस	10-25	16.3
दूरी तय नहीं	33.3	ट्रक / टैक्सी / ऑटो / वैन रिक्शा	भिन्न	भिन्न

[13] आवास पर कार्य करने वाले श्रमिक प्रतिदिन कोई भी देरी नही तय करते हैं। कभी-कभी, वे कच्चे माल आदि को लेने के लिए आना जाना करतें हैं। उनका कोई भी निश्चित आना-जाना नही होता है और वे अपनी जरूरतों के अनुसार अलग-अलग स्थानों का दौरा करते हैं। उसी प्रकार कुछ व्यवसाय जैसे कचरा बीनना, विभिन्न प्रकार के ड्राइवर के लिए भी दूरी का अंदाजा लगाना तय नही होता।

[14] नाम्बियार ने 1965 में मद्रास के मलिन बस्तियों के अध्ययन में पाया कि जनसंख्या का 30 प्रतिशत अपने काम के स्थान से 1 मील की दूरी तक निवासरत हैं जबकि अन्य 40 प्रतिशत लोगों का कार्य स्थल तय नहीं था क्योंकि वे लगभग ऐसे कार्यस्थलों के पास घूमते हैं जो नजदीक हों।

		आदि		
कुल	100			
महिला				
कम से कम 1 किमी के बराबर	73.5	घूमना (वॉकिंग)	2-15	5.4
2 से 5 किमी	20.6	विशेषतः वॉकिंग	10-45	22.1
5 किमी से ज्यादा	2.9	बस	30	30
दूरी तय नहीं	2.9	वॉकिंग	भिन्न	भिन्न
कुल	100			

स्रोतः फ्रेमवर्क, जनवरी से जुलाई, 2010 के आधार पर

सामाजिक सुरक्षा कवर

जैसा कि ज्यादातर झुग्गीवासी अनौपचारिक क्षेत्रों में संलग्न होते हैं, ऐसा समझा जाता है कि वे किसी भी सामाजिक सुरक्षा उपायों जैसे भविष्य निधि, स्वास्थ्य, पेंशन लाभ, वैतनिक अवकाश आदि से वंचित होते हैं। वर्तमान अध्ययन में, केवल दो उत्तरदाताओं को छोड़कर लगभग सभी पुरुष पलायनकर्ता कोई भी सामाजिक सुरक्षा लाभ प्राप्त नही करते हैं। जहां वे सरकारी एवं निजी संगठनों में लगे हुए हैं, वहां वे कई लाभ जैसे चिकित्सा, भविष्य निधि, पेंशन योजना, वैतनिक अवकाश आदि प्राप्त करते हैं। महिला पलायनकर्ता की स्थिति ज्यादा अलग नही है। केवल तीन महिला पलायनकर्ताओं ने स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया है। ये महिलाएं अनिवार्य रूप से करखाने की कर्मचारी हैं।

नौकरी अनुबंध के अनुसार, यह देखा गया कि जब तक मजदूर आकस्मिक या कुछ समय अवधि के लिए है वे कानूनी अनुबंध में प्रवेश नही करते हैं। नौकरी भरोसे पर आधारित होती है और अक्सर व्यक्ति सालों के लिए उसी नियोक्ता के तहत रोजगार लेता रहता है। इसलिए, यह बताया जा सकता है कि सामाजिक सुरक्षा उपायों के मामले में केवल जहां व्यक्ति सरकारी या निजी क्षेत्र में कार्यरत को छोड़कर लगभग अनुपस्थित रहे।

सामाजिक सुरक्षा उपायों की अनुपस्थित के साथ संयुक्त रूप से प्रवासियों ने श्रम बाजार असुरक्षा को भी उजागर किया। लगभग 15 एवं 22 प्रतिशत पुरुष एवं महिलाओं ने बताया कि वे अक्सर अपने नियोक्ता के साथ परेशानियों का सामना करते हैं। इनमें सम्मिलित है, कार्य से अनुपस्थिति करना, जब देरी होती है तो मजदूरों से काम के अनुचित आचरण या नियोक्ताओं की ओर से मजदूरी का भुगतान न करना। इसके अलावा इन श्रम बाजार असुरक्षा से, अन्य 15 प्रतिशत पुरुषों ने बताया कि वे नौकरी

को खोने, काम के रुक-रुक कर उपलब्ध होने आदि संकट से जूझ रहें हैं (कुंडु 2001)। किसी भी मजदूर ने श्रमिक बाजार में किसी भी प्रकार के भेदभाव, शारीरिक या यौन उत्पीडन के बारे में नही बताया। हालांकि, इन मामलों को गुप्त जांच की आवश्यकता होती है जो वर्तमान विश्लेषण के दायरे से बाहर है। इसलिए गरीब पलायनकर्ताओं का एक बड़ा हिस्सा सामाजिक सुरक्षा उपायों के दायरे से बाहर बना हुआ है। हालांकि, पुरुष एवं महिला दोनों के तुलनीय परिणाम में महिला मजदूर बड़ी संख्या में आवास आधारित हैं। वे न केवल किसी भी सामाजिक सुरक्षा के बिना काम करती है, उनका काम या तो अपने घर के काम को खतम होने के बाद होता है साथ साथ अपने काम के बोझ को जोड देती हैं। वे सांख्यिकी में अदृश्य बनी हुई हैं। (ओबेराय एवं चड्डा 2001:14)।

पलायनकर्ताओं के रहने की स्थिति, शहर के जीवन के साथ समायोजन

मलिन बस्तियों को अक्सर कोलकाता के 'काले छिद्र' के रूप में संदर्भित किया जाता है (बिस्वास-डीनेर एवं डीनेर 2001:329)। अत्यंत गरीबी के कारण, मलिन बस्तियों के लोग दयनीय स्थितियों में रहते हैं। कीचड़ वाली जगह, संकीर्ण गलियां एवं अस्वच्छ रहने की स्थिति उनके जीवन स्तर एवं आवास की स्थिति को प्रकट करती है। प्रत्येक परिवार ज्यादातर बिना स्नानागार एवं किचन के एक ही कमरे में रहता है एवं उनके पास न्यूनतम घरेलू परिसंपति होती है।

कोलकाता की चयनित मलिन बस्तियों में, मकान एक के बाद एक सटे हुए हैं एवं खराब रोशनी और कम हवादार होते हैं। दीवार, छत एवं फर्श की सामग्री के आधार पर झुग्गी परिवारों को तीन प्रकार से विभाजित किया गया हैः पक्का, अर्ध-पक्का और कच्चा[15]। 380 परिवारों में से लगभग 58 प्रतिशत उत्तरदाता पक्का, 39 प्रतिशत अर्ध-पक्का में एवं 3 प्रतिशत कच्चा आवास में निवास करते हैं।

आवासों के पक्का, अर्ध-पक्का एवं कच्चा होने की स्थिति आवश्यक नहीं है जो कि बेहतर स्थिति को प्रदर्शित करे, जैसा कि निम्नलिखित विश्लेषण दर्शाता है। जब परिवार का प्रकार एवं रहने के कमरों की संख्या (रसोई को छोड़कर) को आगे अलग से वर्गीकृत किया गया तो यह देखा गया कि 90 प्रतिशत पलायनकर्ता परिवार एकल कमरे में निवास करते हैं, 8 प्रतिशत के पास दो कमरे हैं एवं 2 प्रतिशत परिवारों के पास 3 कमरे है। लगभग सभी एकल कमरे कच्चा आवास है जबकि एक कमरे से

[15] दीवार, छत एवं फर्श की सामग्री के आधार पर परिवारों को तीन प्रकार से विभाजित किया गया है। जहां घर पूरी तरह से कान्क्रीटाइज्ड है (फर्श- कन्क्रीट; छत-कान्क्रीट, दीवारें-कन्क्रीट) यह पक्के के रूप में नामित किया जाता है। जहां पर दीवारे एवं फर्श पक्का हो लेकिन छत मिट्टी की टाइल्स से ढ़की हो तो आवास व्यवहार में सेमि-पक्का होगा। जहां पर आवास पूर्ण रूप से कच्ची सामग्री (फर्श-मिट्टी, छत-मिट्टी की टाइल्स, प्लास्टिक, पॉलिथीन शीट, घास/फूस/फूस की पत्तियों आदि से और दीवारें- बांस, मिट्टी के गारे, प्लास्टिक, पॉलिथीन शीट, घास/फूस/फूस की पत्तियों से बनी हो तो इसको कच्चे आवास के रूप में माना जाएगा।

ज्यादा वाले भी बहुत अच्छे न होकर अर्ध-पक्का एवं पक्का आवासीय इकाई हैं। उदाहरण के लिए, 9 प्रतिशत पक्का की तुलना में लगभग 7 प्रतिशत अर्ध-पक्का आवास में दो कमरे हैं। ज्यादातर सभी सामग्रियों को एक ही कमरे में समायोजित किया जाता है और अधिकांश मामलों में घर में रसोई का अभाव होता है।

ज्यादातर निजी शौचालय की सुविधा झुग्गी में अनुपस्थित नहीं होती हैं केवल 11 प्रतिशत परिवारों के पास उनके घर के अंदर अलग से शौचालय/स्नानागार की सुविधा थी, बाकी के लोग सार्वजनिक प्रावधानों का उपयोग करते हैं। झोपड़ियों के प्रकार के साथ एक निकट संबंध बयान करता है कि किसी भी कच्चे परिवार के पास शौचालय/स्नानागार की सुविधा नही है। लगभग 5 प्रतिशत अर्ध-पक्के एवं 15 प्रतिशत पक्का परिवारों के पास ही उनके स्वयं के शौचालय/स्नानागार की सुविधा है।

पलायनकर्ताओं के साथ एक गहराई से साक्षात्कार दर्शाता है कि एक ओर वे अपने प्रियजनों से दूर रहने के दर्द से गुजर रहें हैं और दूसरी ओर नई दुनिया में जीने के लिए लगातार प्रयासरत हैं। वे रहने की व्यवस्था, झुग्गी की गंदी स्थिति, भीड़, पानी की सेवाओं तक पहुंचना, अज्ञात शहर के वातावरण आदि के मामले में उनको प्रमुख बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

शहर में पहुंचने पर महिलाओं को उन गतिविधियों के लिए मुश्किल का सामना करना पड़ता है जो आमतौर पर महिला केन्द्रित हैं। इनमें पानी लाना, एक ही कमरे में घर के सभी कामों का समायोजन शामिल है। ये सभी उनके लिए एक नई चुनौती पेश करते हैं। एक पलायनकर्ता ने बताया किः

> *जब मैं शादी के बाद ससुराल गई, मैं कमरे के आकार को देखकर दंग रह गयी। हमारे गांव में, हमारे पास बड़ा एवं विभिन्न कामों के लिए अलग-अलग कमरे थे। किन्तु यहां पर केवल एक ही कमरा है। शुरूआत के वर्षों में, मुझे समायोजन करने में कठिनाई होती थी- इसके अलावा बिस्तर एवं फर्नीचर के साथ मार के रूप में अन्य सांसारिक बातें मुझे परेशान करती थीं। किन्तु शादी के सात साल बाद, मैं इस तरह रहने की स्थिति में अच्छी तरह समायोजित हो गई हूँ।*
>
> दक्षिण चौबीस परगना, पश्चिम बंगाल से 27 साल की उम्र में प्रवासी

इसके अलावा, मलिन बस्तियों में एक कमरे के आवास अक्सर एक निवारक कारक के रूप में बनाए जाते हैं जहां पर महिलाओं के लिए व्यक्तिगत स्थान सुरक्षित करना संभव नहीं है, जगह की कमी बाहरी लोगों (पुरुषों) के लिए महिलाओं को और अधिक आलोचनीय बना देती है।

न केवल दैनिक जीवन में, व्यापक संदर्भ में शहर के जीवन के एकाकीपन में तनाव और खिचांव शामिल है। नया वातावरण न केवल विभिन्न प्रकार की असुविधाओं का कारण बनता है बल्कि पलायनकर्ता जहां पर रहते हैं वहां के बड़े समाज के वैमनस्य से गुजरते हैं। नये समाज अक्सर में

स्वीकृति आसान नहीं है और पलायनकर्ता नये शहर में बसने पर अलगाव की भावना का अनुभव करते हैं। ये लोग स्थानीय लोगों के साथ लगातार आलोचना में रहते हैं जो उनको 'बाहरी', या 'बिहारिस' के नाम से बुलाते हैं जो शहर में भीड़ पैदा करते हैं। महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि कभी-कभी, उनको पानी लाने पर एवं अन्य गतिविधियों के लिए रोका जाता है। कभी कभी, महिलाओं को 'मुल्किस' के नाम से ताना मारा जाता है, उनमें नागरिक भावना की कमी होती है एवं शहरी जीवन में उनको 'मिस्फिट' माना जाता है। इस प्रकार के गैर (हिंसक) क्षेत्रीय संघर्ष भारत के अन्य भागों में आम बात है (भवानी एवं लेसिना 2010; राजन, कोर्रा, चिरमंग 2011)।

इन कमियों के बावजूद, शहर पलायनकर्ताओं को बेहतर जीवन जीने के लिए सक्षम है। पुरुष पलायनकर्ता जो गरीब ग्रामीण पृष्ठभूमि से निकले हैं वे अपने जीवन को बदलने के लिए रोजगार पाते हैं। शहर के काम उन्हें जीवित रहने के लिए मदद करते हैं। जामुई से एक पलायनकर्ता कहता है किः *'हम गांव में बहुत गरीब हैं। मैंने अपने भाई के साथ बहुत कम उम्र में पलायन किया था। शहर ने हमको काम दिया। अब माता-पिता सहित हमारा परिवार बेहतर है और हम आवश्यकता पड़ने पर पैसा खर्च कर सकते हैं, अन्यथा हम भूखे भी रहते थे'।* यही कारण है कि कई सामाजिक-सांस्कृतिक के साथ-साथ वित्तीय बाधाओं को एक तरफ रखकर एक नई दुनिया में बेहतर जीवन जीने की आशा के साथ पलायन किया जाता है।

III निष्कर्ष

श्रम बाजार पर विशेष ध्यान देने के साथ कोलकाता के झुग्गी की पलायन पद्धति का पता लगाने के लिए वर्तमान अध्ययन का प्रस्ताव रखा गया। इसको खोजने के लिए, भारत के पश्चिम बंगाल में कोलकाता के पलायनकर्ता श्रमिकों के संपूर्ण प्रोफाइल की सामान्य रूप से चर्चा करनी होगी ताकि कोलकाता की झुग्गी के गरीब पलायनकर्ताओं के मामले को प्रासंगिक किया जा सके। पलायन की प्रकृति एवं सीमा, उनके श्रम बाजार के परिणाम के लिए विशेष संदर्भों के साथ आवास एवं काम की स्थिति का पता लगाने के लिए कोलकाता में झुग्गी पलायनकर्ताओं पर एक प्राथमिक सर्वेक्षण की मांग की गयी।

अध्ययन शहरी भारत की तुलना में पिछले कुछ वर्षो में स्वयं के लिए पलायनकर्ताओं को आकर्षित करने में पश्चिम बंगाल के महत्व की गिरावट को दर्शाता है। इसके अलावा, कोलकाता के लिए पलायनकर्ताओं का अनुपात भी कम है, क्योंकि मुम्बई, दिल्ली, बैंगलौर आदि शहरों के एक निरंतर आर्थिक विस्तार के साथ राज्य एवं शहर के महत्व में भी गिरावट आई है।

यद्यपि, प्रवासियों की कम संख्या कोलकाता में गतिशील हुई है, उनमें से शहर में काम ढूंढने वालों का हिस्सा ज्यादा है और भारत एवं पश्चिम बंगाल की तुलना में वास्तव में कार्यरत हैं। यह पलायनकर्ताओं के लिए रोजगार उपलब्ध कराने में शहर के उच्च आर्थिक विस्तार का सुझाव देती है। इसके अलावा, कोलकाता में पलायनकर्ता श्रमिकों का बड़ा हिस्सा नियमित वेतन में है जो मुख्य रूप से उनकी उच्च शैक्षिक उपलब्धियों की वजह से है। महिला पलायनकर्ताओं की एक बड़ी संख्या, जो स्नातक एवं उससे अधिक के साथ योग्य हैं, वे शिक्षा क्षेत्र में काम करने के लिए नियमित वेतनभोगी बनकर नौकरी कर रही हैं।

यह अच्छी तरह से प्रलेखित है कि, समृद्ध उच्च वर्गों की तुलना में गरीबों की पलायन की दर पर्याप्त रूप से कम है जैसा कि रहने की उच्च लागत उनको शहरों की ओर विमुख कर देती है। अभी तक, शहरी भारत एवं पूरे पश्चिम बंगाल की तुलना में कोलकाता में गरीब लोगों का पलायन बढ़ा है। भारत में एवं पश्चिम बंगाल में स्वरोजगार के विपरीत, ये गरीब पुरुष पलायनकर्ता आमतौर पर शहर में आकस्मिक मजदूर के रूप में संलग्न हैं। उपरोक्त निष्कर्ष शहर में गरीब पलायनकर्ताओं के लिए अधिक से अधिक श्रम बाजार के अवसरों के लिए पहुंच की दिशा में केन्द्रित है।

कोलकाता (प्राथमिक सर्वेक्षण से) में गरीब झुग्गी पलायनकर्ताओं की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करते हुए, अध्ययन बताता है कि कोलकाता में पलायनकर्ता आमतौर पर पश्चिम बंगाल एवं अन्य राज्य जैसे बिहार, उत्तर प्रदेश के आर्थिक रूप से पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों से आते हैं। अध्ययन एक बार फिर से पलायन सिद्वान्तों में पुश-पुल प्रतिमान की अवधारणा की पुष्टि करता है कि जहां पर रोजगार की कमी, काम के अवसर, गरीबी, कम पारिश्रमिक के कारण वे शहर की ओर खिंचते हैं और काम के अवसर, ज्यादा मजदूरी, बेहतर नागरिक सुविधाओं आदि की ओर खिंचते चले जाते हैं। अर्थात, विशेषकर पुरुष के लिए रोजगार के प्रयोजन के लिए पलायन प्रमुख कारण है। अपने परिवार के लिए बेहतर जीवन के मुख्य उद्देश्य के साथ वे कम और अधिक दोनों अवधि के लिए पास या दूर के स्थान पर गतिशील होते हैं।

69 प्रतिशत के आसपास पुरुष पलायनकर्ता रोजगार के उद्देश्य के लिए शहर में पलायन करते हैं। वे पुरुष पलायनकर्ता जिन्होने अपने जन्म के क्षेत्र में नकारात्मक कारकों का जबाब दिया है वे तुलनात्मक रूप से युवा, अविवाहित और जोत की भूमि के मामले में अपने गांव में कम जमीन वाले हैं। इसके विपरीत, वे पलायनकर्ता जिन्होंने शहर के सकारात्मक कारकों को आर्थिक दृष्टि से बेहतर बताया है। वे शहर में तभी पलायन करेंगें जब उनके पास बेहतर नौकरी का अवसर होगा।

पुरुषों के लिए इसके विपरीत, 90 प्रतिशत से भी अधिक महिलाएं विवाह के उद्देश्य और परिवार के पुर्नमिलन के लिए शहर में पलायन करती हैं। ये महिला पलायनकर्ता कुछ समय गांव में रहने के बाद या तो विवाह के लिए जहां पर वे विवाह के बाद तुरंत जा सकें या परिवार के पुनर्मिलन के हिस्से के रूप में खुद को दूसरी जगह ले जाती हैं।

विशेषतः पलायनकर्ता आबादी के लिए श्रम बाजार शहरी अनौपचारिक क्षेत्र में उनकी एकाग्रता के लिए सुझाव देता है। अध्ययन बताता है कि श्रम बाजार में पलायनकर्ता पुरुषों की भागीदारी उनके पलायन से पहले की अवधि की तुलना में लगभग दोगुनी हो गयी है। इसके विपरीत श्रम बाजार में प्रवासी महिलाओं की भागीदारी 24 से 34 प्रतिशत बढ़ गयी है। इसके अलावा, अध्ययन सुझाव देता है कि पुरुष एवं महिला दोनों पलायनकर्ताओं के स्वयं के रोजगार में एक बड़ी वृद्धि हुई है। अध्ययन पलायनकर्ताओं की कुछ सफल कहानियों की व्याख्या करता है जहां पर वे अपने स्वयं के छोटे मोटे व्यवसाय चालू करते हैं और मजदूरों को नौकरी पर रखते हैं। सभी पलायनकर्ता मजदूरों में लगभग 22 प्रतिशत नियोक्ता हैं। पुरुषों के लिए इसके विपरीत, पलायनकर्ता महिलाओं का केवल 1 प्रतिशत ही नियोक्ता हैं। महिला श्रमिक घर की जिम्मेदारी के कारण उप-ठेका श्रमिकों पर (40 प्रतिशत) बहुत निर्भर होती हैं और 23 प्रतिशत अपने पति/बेटे आदि के लिए अवैतनिक घरेलू सहायक होती हैं। कोलकाता की मलिन बस्तियों में पुरुषों के लिए नियमित रूप से वेतनभोगी नौकरियों की बहुत कम गुंजाइश होती है। किन्तु महिला पलायनकर्ताओं का एक तिहाई हिस्सा नियमित वेतनभोगी नौकरियों में, मुख्य रूप से घरेलू नौकरानियों के रूप में काम और कारखाने के कर्मचारियों के रूप में कार्य करती हैं।

एक सकारात्मक श्रम बाजार परिणाम जो स्पष्ट रूप से अध्ययन से उभर कर आता है पुरुष एवं महिला दोनों के लिए पलायन से पूर्व की स्थिति की तुलना में पलायन के बाद काम करने के दिनों में एक औसत वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए, पलायन से पहले के 177 दिन प्रतिवर्ष की तुलना में शहर में आदमी एक साल में 280 दिन के लिए काम पाता है। महिलाओं के लिए यह आंकड़ा 259 एवं 171 दिन है। इस प्रकार के निष्कर्ष बताते हैं कि एक बड़ी मात्रा में पलायनकर्ता की श्रम बाजार की असुरक्षाएं कम हुई हैं। इसके अलावा शहर में काम की स्थिति बदली है जो सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रभावों पर जोर देती है।

इसके अतिरिक्त अध्ययन बताता है कि जो पुरुष गांव व शहर के बीच एक संचार शैली बनाए रखते हैं उनकी आय के स्रोत अलग-अलग होते हैं। स्पष्ट रूप से, पुरुष पलायनकर्ता जो अकेले गतिशील होते हैं वे शहर में फार्म-रोजगार या जब शहर में काम कम होता है तो गांव में मनरेगा आदि में रोजगार पाते हैं।

अध्ययन का निष्कर्ष है कि पलायनकर्ता व्यवसायिक गतिशीलता का अनुभव करते हैं। पलायन के पूर्व की अवधि में वे गांव में कृषि कार्य में संलग्न थे। जबकि शहर में, वे विनिर्माण में, खुदरा व्यापार में, परिवहन में एवं निर्माण क्षेत्र में अथवा घरेलू नौकर के रूप में काम करते हैं। यदि, इस प्रकार की नौकरियां ऊपर की गतिशीलता पर जोर देती हैं तो ग्रामीण और शहरी स्थापनाओं में काम करने के संदर्भ में विभिन्नता करना मुश्किल होगा। हालांकि, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि गांव में कोई काम न होने से शहर में काम करना निश्चित रूप से बिना किसी काम के ऊपर की गतिशीलता है।

इसके अलावा, अप्रवासी शहर में काम करने के अवसर की वृद्धि का अनुभव करते हैं, वे कई प्रकार के काम एवं रहने की स्थिति की कठिनाई से गुजरते हैं। मलिन क्षेत्र आवास में आवश्यक दैनिक कार्यों का करने सीमित क्षेत्र उपलब्ध कराते हैं। सीमित जगह और अधिक परेशान करती है, जब ये स्थान काम का स्थान बन जाता है। इसके अतिरिक्त, पलायनकर्ता जब शहर के जीवन के साथ एकीकृत होते हैं तब वे कई तनाव व परेशानियों से गुजरते हैं। वे स्थानीय लोगों की नफरत का शिकार होते हैं। इन कमियों के बावजूद, शहर पलायनकर्ताओं को एक बेहतर जीवन देने के लिए सक्षम है।

संदर्भ

बेली, ए. 2011. ‘इन सर्च ऑफ़ लाइवलीहुड्स: माइग्रेशन एंड मोबिलिटी फ्रॉम कर्नाटक टू गोवा’ इन इरुडाया राजन (इडी.), *माइग्रेशन, आइडेंटिटी एंड कंफ्लीक्ट, न्यू यॉर्क, लंडन, नई दिल्लीः रूटलेज। पीपी 108-124.*

बर्धन, पी. 1989. द इकोनोमिक थ्योरी ऑफ अग्रेरीयन इंस्टीट्यूशन्स, ऑक्सफ़ोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

भगत, आर.बी. 2011. 'इंटरनल माइग्रेशन इन इंडियाः आर द अंडरक्लास मोर मोबाइल' इन इरूडाया राजन (इडी.), माइग्रेशन, आइडेंटिटी एंड कंफ्लीक्ट, लंडन, एंड नई दिल्लीः रूटलेज। पीपी 7-24.

भगत, आर.बी. एंड एस. मोहंती. 2010 'इमर्जिंग पैटर्न ऑफ़ अर्बेनाइजेशन एंड कॉन्ट्रिब्यूशन ऑफ़ माइग्रेशन इन अर्बन ग्रोथ इन इंडिया' एशियन पॉपुलेशन स्टडीज, 5(1):5-20

भवानी, आर. एंड बी. लेसिना। 'द इफेक्ट्स ऑफ़ एक्सोजीनस शॉक्स टू माइग्रेशन ऑन वायलेंस इन इंडिया', पेपर प्रेजेंटेड एट द अमेरिकन पोलिटिकल साइंस एसोसिएशन एनुअल मीटिंग, सितंबर, 2-5, 2010

बिवास-दीनेर, आर. एंड ईडी. दीनेर. 2001. 'मेकिंग द बेस्ट ऑफ़ ए बेड सिचुएशन: सैटिस्फैक्शन इन द स्लम्स ऑफ़ कलकत्ता', *सोशल इंडीकेटर्स रिसर्च*, 55: 329-352

ब्रुइंजे, जी. ए. डी एंड एच. शेंक. 1992. 'वेर डू द पुअर लाइव'?: एन एनालिसिस ऑफ़ रेजिडेंशियल पैटर्न्स ऑफ़ पुअर इनहैबिटेंट्स इन इंडियन सिटीज', *द इंडियन ज्योग्राफिकल जर्नल,* 67(2):1-16

सेन्सस 2001, माइग्रेशन डाटा, एब्सट्रेक्टस ऑन डेटा हाइलाइट्स।

कोन्नेल, जे.बी. दासगुप्ता, एल. रॉय एंड एम. लिप्टोन. 1976. *माइग्रेशन फ्रॉम रूरल एरियाजः* द एविडेंस फ्रॉम विलेज स्टडीज, नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

दास एम.बी. 2006. 'डू ट्रेडिशनल एक्सेस ऑफ सेक्लुजन एफेक्ट लेबर मार्किट आउटकम इन इंडिया? साउथ एशियन सीरिज, पेपर नं. 97.

डेविस, के. 1951. द पॉपुलेशन ऑफ इंडिया एंड पाकिस्तान. प्रिंसटोनः प्रिंसटोन यूनिवर्सिटी प्रैस।

डी, हान, ए. 2000. 'माइग्रेंट्स, लाइवलीहुड्स, एंड राइट्सः द रेलीवेंस ऑफ माइग्रेशन इन डेवलपमेंट पॉलिसीज', सोसियल डेवलपमेंट वर्किंग पेपर नं. 4डीई हान 2001;

देशिंगकार पी एंड डी. स्टार्ट। 2003। 'सीजनल माइग्रेशन फॉर लाइवलीहुड्स इन इंडियाः कॉपिंग, एकुमुलेशन, एंड एक्सक्लुजन', ओवरसीज डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट, वर्किंग पेपर 220

डे, डी एंड एस. दासगुप्ता. 2010ए, 'स्माल बिजनेस, बिग रोल - II', *फ्रंटियर*, 43(23):19-25

दुरीयासामी, पी. एंड एस. नरसिम्हान. 1997. 'वेज डिफ्रेन्शियल्स बिटवीन माइग्रेंट एंड नॉन-माइग्रेंट एंड द डिस्क्रिमिनेशन इन अर्बन इनफॉर्मल सेक्टर इन इंडिया', *इंडियन जर्नल ऑफ लेबर इकोनॉमिक्स, 40(2): 223-235.*

इकनोमिक सर्वे ऑफ बिहार, 2007, सेंसस ऑफ इंडिया, रजिस्ट्रार जनरल।

एडवर्ड्स, एल.एन. एंड ई. फील्ड-हैंद्रेय. 1996. 'होम-बेस्ड वर्कर्सः डेटा फ्रॉम द 1990 सेंसस ऑफ पॉपुलेशन', मंथली लेबर रिव्यू (नवंबर): 26-34.

घोष. जे. 2002. 'ग्लोबालाइजेशन, एक्सपोर्ट-ओरियंटेड एम्पलॉयमेंट फॉर वॉमेन एंड सोसियल पॉलिसीः ए केस स्टडी ऑफ इंडिया', सोसियल साइंटिस्ट, 30(11/12):17-60

गुलाटी, एल. 2006. '*एशियाई वॉमेन वर्कर्स इन इंटरनेशनल लेबर माइग्रेशनः एन ओवरव्यू' इन अनुजा अग्रवाल (इडी.) माइग्रेंट वॉमेन एंड वर्क, नई दिल्लीः सेज पब्लिकेशन.पीपी. 46-72:*

गुलाटी, एल. 1997. 'एशियन वॉमेन इन इंटरनेशनल लेबर माइग्रेशन विद स्पेशियल रेफ्रेंस टू डोमेस्टिक वर्क', *आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 32(47): 3029-3189*

करण, ए.के. 2003, 'चेंजिंग पैटर्न ऑफ़ माइग्रेशन फ्रॉम रूरल बिहार', लेंड एंड डेवलपमेंट, 9(2): 155-195.

खान, एस. 2007. 'नेगोसियटिंग द मोहल्लाः एक्सक्लुजन, आईडेंटिटी एंड मुसलिम वॉमेन इन मुम्बई', *इकोनॉमिक एंड पॉलिटीकल वीकली*, 42(17):1527-1533

खुल्लर, डी.आर. 2000. इंडिया, *ए कोम्प्रिहेंसिव जियोग्राफी।* अमहदाबादः कल्याणी पब्लिशर्स।

कोर्रा, वी. 2011. 'शॉर्ट-डायरेशन माइग्रेशन इन इंडिया' इन I, राजन (ई.), *माइग्रेशन, आइडेंटिटी एंड कंफ्लीक्ट,* लंडन एंड दिल्लीः रूटलेज। पीपी 52-71.

कुंडु ए. 2007. 'माइग्रेशन एंड एक्सक्लूजनरी अर्बन ग्रोथ इन इंडिया' आईआईपीएस न्यूज लेटर 46(3 तथा 4): 5-23.3079-3088.

कुंडु ए. 2011ए. 'मेथड इन मैडनेसः अर्बन डेटा फ्रॉम 2011 सेंसस', *इकॉनोमिक एंड पॉलिटीकल वीकली*, 46(40): 13-16.

कुंडु ए. 2011बी. 'पॉलिटिक्स एंड इकोनॉमिक्स ऑफ अर्बन ग्रोथ', *इकॉनोमिक एंड पॉलिटीकल वीकली*, 46(20):10-13.

कुंडु ए. 2003. 'अर्बेनाइजेशन एंड अर्बन गवर्नेंसः सर्च फॉर ए पर्सपेक्टिव बियॉन्ड नियो-लिबेरलिज्म', *इकॉनोमिक एंड पॉलिटीकल वीकली*, 38(29):पीपी 3079-3087

कुंडू, ए. एंड एस. गुप्ता 2000. 'डीक्लिनिंग पॉपुलेशन मोबिलिटी, लाइबेरालाइजेशन एंड ग्रोविंग रीजनल इम्बैलेंस: द इंडियन केस', इन ए. कुंडु (इडी.), इनक्वालिटी, मोबिलिटी एंड अर्बेनाइजेशन, नई दिल्लीः आईसीएसएसआर एंड मानक पब्लिशर्स. पीपी. 257-274.

लिंगम, एल. 1998ए. 'लोकेटिंग वॉमेन इन माइग्रेशन स्टडीजः एन ओवरव्यू', इ इंडियन जर्नल ऑफ सोसियल वर्क, 59(2):715-727.

लिंगम, एल. 1998बी. 'माइग्रेंट वर्क पार्टिसिपेशन एंड अर्बन एक्सपिरियंसेस', *द इंडियन जर्नल ऑफ सोसियल वर्क*, 59(2): 807-823.

महादेविया, डी. 2011. 'ब्रांडेड एंड रीनीव्ड? पॉलिसीज, पॉलिटीक्स एंड प्रोसेस ऑफ अर्बन डेवलपमेंट इन द रिफॉर्म एरा', *इकॉनोमिक एंड पॉलिटीकल वीकली*, 46(31), 56-64.

मजूमदार, डी. 1987. 'रूरल-अर्बन माइग्रेशन इन डेवलपिंग कंट्रीज', हैंडबुक ऑफ रीजनल एंड अर्बन इकॉनोमिक्स, 2(28): 1097-1128

मेंडोला, एम. 2006. 'रूरल आउट-माइग्रेशन एंड इकोनोमिक्स डेवलपमेंट एट द ओरीजीनः व्हाट डू वी नोव?, ससेक्स माइग्रेशन वर्किंग पेपर नं. 40. यूनिवर्सिटी ऑफ मिलानो-बायकोस्का एंड सेंट्रो स्टडी एल. डी'एग्लीनो.

मित्रा, ए. 1994: *अर्बेनाइजेशन, स्लम्स, इनफॉर्मल सेक्टर एम्प्लॉयमेंट, एंड पॉवर्टीः एन एक्सप्लॉरेटरी स्टडी.* नई दिल्लीः बी.आर. कॉरपोरेशंस.

मुखर्जी, एस. 2001. 'लो क्वालिटी माइग्रेशन इन इंडियाः द फेनोमेनन ऑफ डिस्ट्रेस माइग्रेशन एंड एक्यूट अर्बन डीके', 24वां आईयूएसएसपी कॉन्फ्रेंस, सेल्वाडोर, ब्राजील.

मुखोपाध्याय, I. 1998. 'कलकत्ता'स इनफोरमल सेक्टरः चेंजिंग पैटर्न ऑफ लेबर यूज', *इकोनॉमिक एंड पॉलिटीकल वीकली*, 33(47 तथा 48):3075-3080.

नामबियर, पी.के. 1965. 'स्लम्स ऑफ मद्रास सिटी, सेंसस ऑफ इंडिया 1961, 10 (11-सी), दिल्लीः मैनेजर ऑफ़ पब्लिकेशन्स.

नारयणन, एच., डी. महादेविया एंड आर. मैथ्यूज. 2008. 'डेमोलिशन ऑफ लिव्स एंड लिव्लीहुड्सः मुम्बई', इन डी. महादेविया (इडी.), इनसाइड द ट्रांसफॉर्मिंग अर्बन एशियाः प्रोसेस, पॉलिसीज एंड पब्लिक एक्शन, नई दिल्लीः कॉन्सेप्ट. पीपी. 415-450.

नेशनल सैंपल सर्वे आर्गेनाईजेशन, रिपोर्ट ऑन माइग्रेशन इन इंडिया, 64वां राउंड, 2007-2008नीथा 2011

ओइसी, एन. 2002. 'जेंडर एंड माइग्रेशनः एन इंटीग्रेटिव एप्रोच', सिनोप्सिस ऑफ हिज फोर्थकमिंग बुक वॉमेन इन मोशन: ग्लोबालाइजेशन, स्टेट पॉलिसीज एंड लेबर माइग्रेशन इन एशिया (स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस).

पैस, जे. 2006. 'सम फीचर्स ऑफ माइग्रेशन एंड लेबर मोबिलिटी इन द लैदर एक्सेसरीज मैनुफैक्चर इन इंडिया: ए स्टडी इन द लाइट ऑफ़ इकोनोमिक रिफॉर्म्स',

पापानेक, एच. 1985. 'क्लास एंड जेंडर इन एजुकेशन-एम्प्लॉयमेंट लिंकेजेस', *कॉम्पारेटिव एजुकेशन रिव्यू*, 29(3):317-346

पैरलीवाला, आर. एंड पी. ओबेरॉय. 2008. 'एक्सप्लोरिंग द लिंक्सः जेंडर इश्यूज इन मैरिज एंड माइग्रेशन' इन रजनी पारलीवाला एंड पैट्रासिया उबेरॉय (इडीएस), मैरिज, माइग्रेशन एंड जेंडर, नई दिल्लीः सेज पीपी. 23-62.

प्रेमी, एम.के. 1980. 'अस्पेक्ट्स ऑफ फीमेल माइग्रेशन इन इंडिया', इकोनॉमिक एंड पॉलिटीकल वीकली, 15(15):714-20.

राजन, आई., वी. कोर्रा एंड आर. चयरमांग. 2011. 'पॉलिटिक्स ऑफ कनफ्लिक्ट एंड माइग्रेशन' इन आई. राजन (इडी.), माइग्रेशन, आइडेंटिटी एंड कनफ्लिक्ट, लंदन एंड नई दिल्लीः रूटलेज. पीपी. 95-101.

राजू, एस एंड डी दीपिका बागची, एड. (1993): *वॉमेन एंड वर्क इन साउथ एशियाः रीजनल पैटर्न्स एंड पर्सपेक्टिव्स*, लंडन एंड न्यू यॉर्कः रूटलेज

राजू, एस. 2010. 'मैपिंग द वर्ल्ड ऑफ वॉमेन'स वर्कः रीजनल पैटर्न्स एंड पर्सपेक्टिव्स'स, आईएलओ एशिया-पैसिफ़िक वर्किंग पेपर सीरीज.

रॉय, एम.बी. 1994. कलकत्ता स्लम्सः पब्लिक पॉलिसी इन रेट्रोस्पेक्ट, मिनेर्वा एसोसिएट्स (पब्लिकेशंस) प्राइवेट लिमिटेड

सीले, जे., एस. रयान, आई.ए. खान एंड एम.आई. हुस्सैन. 2006. 'जस्ट सर्वाइविंग ऑर फाइंडिंग स्पेस टू थ्राइव?: द कॉम्प्लेक्सीटी ऑफ इंटरनल माइग्रेशन ऑफ़ वॉमेन इन बांग्लादेश' इन संध्या आर्या एंफ्ड अनुपमा रॉय (ईडीएस), *पॉवर्टी, जेंडर एंड माइग्रेशन*, नई दिल्लीः सेज पब्लिकेशन. पीपी. 171-190.

सिंह, डी.पी. 2007. 'रीजनल इनइक्वालिटी, पॉवर्टी एंड माइग्रेशन', अर्बन पॉवर्टी रिपोर्ट, 13-14वीं जुलाई, जीओआई-यूएनडीपी परियोजना, जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी.

शिवरामकृष्णन, के. सी. 2011. 'अर्बन डेवलपमेंट एंड मैक्रो गवर्नेंस', *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली,* 54(31): 49-55.

श्रीधर, के.एस. एंड वी. रेड्डी. 2011. ‘रूरल टू अर्बन माइग्रेशनः रिसेंट एविडेंसेस फ्रॉम बैंगलोर' इन इरूडाया राजन (ईडी.), *माइग्रेशन, आइडेंटिटी एंड कनफ्लिक्ट;* लंदन, नई दिल्लीः रूटलेज, पीपी. 125-143.

श्रीवास्तव, आर. 1998. ‘माइग्रेशन एंड द लेबर मार्किट इन इंडिया’, द इंडियन जर्नल ऑफ लेबर इकॉनोमिक्स, 41(4): 583-624.

श्रीवास्तव, एस और एस.के. ससिकुमार. 2003. 'ए रिव्यु ऑफ़ माइग्रेशन इन इंडिया, इट्स इम्पेक्ट एंड की इशूज'. पेपर प्रेजेंटेड एट द रीजनल कांफ्रेंस ओन माइग्रेशन, डेवलपमेंट एंड प्रो-पुअर पॉलिसी चोइसेस इन एशिया, 22-24 जून, ढाका

श्रीवास्तव, एस. 2011. 'इंटरनल माइग्रेशन इन इंडियाः एन ओवरवीयू ऑफ इट्स फीचर्स, ट्रेंड्स एंड पॉलिसी चैलेंजेस', यूनाइटेड नेशंस एजुकेशनल, साइंटिफिक एंड कल्चरल ऑर्गेनाइजेशन

श्रीवास्तव, एस. एंड एस. भट्टाचार्य 2003. 'ग्लोबलाइजेशन, रिफॉर्म्स एंड इंटरनल लेबर मोबिलिटीः एनालाइजिस ऑफ रिसेंट इंडियन ट्रेंड्स', *लेबर एंड डेवलपमेंट* 9(2):31-55.

सुब्रमण्यम, वी. 2001. ट्रेंड्स इन जॉब क्रिएशन इन अर्बन इनफॉर्मल सेक्टर इन वेस्ट बंगाल, इन ए.एस. ओबेरॉय एंड जी.के. चड्ढा (इडीएस.), अर्बन इनफॉर्मल सेक्टर इन इंडियाः इशूज एंड पॉलिसी ऑप्शंस, न्यू दिल्लीः आईएलओ. पीपी 395-410

टी.वाई. टैन. 2007. 'पोर्ट सिटीज एंड हिंटेरलैंड्सः ए कॉम्पेरेटिव स्टडी ऑफ सिंगापुर एंड कलकत्ता', *पोलिटिकल जियोग्राफी*, 26:851-865

उल्लाह, ए.के.एम.ए. 2007. "द स्टेट ऑफ फीमेल माइग्रेशन फ्लो इन इंटरनेशनल लेबर मार्किटः हाउ इज बांग्लादेश डूइंग?", डिपार्टमेंट ऑफ अप्लाइड सोसियल स्टडीज, सिटी यूनिवर्सिटी ऑफ होंग कोंग।

वेस्ट बंगाल ह्युमैन डेवलपमेंट रिपोर्ट, 2004, डेवलपमेंट एंड प्लानिंग डिपार्टमेंट, गवर्नमेंट ऑफ़ वेस्ट बंगाल.

यदावा, के.एन.एस., एस.एस. यादव एंड आर.के. सिंहा. 1996/97. 'रूरल आउट-माइग्रेशन एंड इट्स इकोनॉमिक इम्पलीकेशंस ओन माइग्रेंट हाउसहोल्ड इन इंडिया. ए रिव्यू', *द इंडियन इकनोमिक जर्नल*, 44 (2):21-38.

यांग, ए.ए. 1979. 'पीजेन्ट्स ओन मूवः ए स्टडी ऑफ इंटरनल माइग्रेशन इन इंडिया', *द जर्नल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी हिस्ट्री*, 10(1):37-58.

जचरियाह, के.सी. एंड आई. राजन. 2011. 'इमाइग्रेशन एंड रेमिट्टेंसेस इन केरल इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ सर्ज इन ऑयल प्रिंसेस' इन इरुडाया राजन (ईडी.), लंदन, न्यू यॉर्क एंड नई दिल्लीः रूटलेज. पीपी. 275-296.

परिशिष्ट

तालिका ए1: शहरी भारत, पश्चिम बंगाल एवं कोलकाता में शैक्षिक योग्यता से पलायनकर्ता श्रमिक

प्राप्त शैक्षिक मानक	भारत			पश्चिम बंगाल			कोलकाता		
	पुरुष	महिला	व्यक्ति	पुरुष	महिला	व्यक्ति	पुरुष	महिला	व्यक्ति
अशिक्षित	11.2	39.6	19.3	15.6	35.2	21.6	18.0	12.0	16.9
अनौपचारिक रूप से शिक्षित	0.9	0.9	0.9	2.8	2.6	2.8	3.0	6.4	3.6
प्राथमिक नीचे	6.0	7.0	6.2	10.9	9.0	10.3	17.7	13.7	17.0
प्राथमिक और मध्य	29.4	21.9	27.2	33.6	27.7	31.8	39.7	31.1	38.2
माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक	26.3	12.0	22.2	16.1	9.0	13.9	10.7	2.3	9.2
डिप्लोमा/प्रमाणपत्र	4.4	2.6	3.9	2.4	0.3	1.8	1.7	0.0	1.4
स्नातक तथा अधिक	21.8	16.0	20.1	18.6	16.2	17.8	9.3	34.5	13.7
कुल	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0

स्रोतः एनएसएसओ, माइग्रेशन के यूनिट स्तर डेटा, 64वां राउंड, 2007-08

तालिका ए2: भारत, पश्चिम बंगाल एवं कोलकाता में काम के राष्ट्रीय औद्योगिक वर्गीकरण से पलायनकर्ता श्रमिक

श्रमिक के राष्ट्रीय औद्योगिक वर्गीकरण	भारत			पश्चिम बंगाल			कोलकाता		
	पुरुष	महिला	व्यक्ति	पुरुष	महिला	व्यक्ति	पुरुष	महिला	व्यक्ति
कृषि, मछली पकड़ना, वानिकी आदि	3.1	18.7	7.4	1.4	2.6	1.8	0.1	0.0	0.1
खनन एवं उत्खनन	0.8	0.3	0.6	1.2	0.2	0.9	0.0	0.0	0.0
विनिर्माण	27.1	26.3	26.9	32.8	40.3	35.0	36.0	16.8	32.9
बिजली गैस और जलापूर्ति	1.1	0.3	0.8	2.0	1.0	1.7	2.5	0.0	2.1
निर्माण	9.3	5.3	8.1	7.9	0.4	5.7	8.4	1.2	7.2
थोक, खुदरा व्यापार, होटल और रेस्तरां	21.8	13.3	19.4	22.9	5.0	17.6	24.7	6.6	21.8
परिवहन, भंडारण और संचार	11.7	1.6	8.9	12.7	1.7	9.5	13.7	0.8	11.7

वित्त संबंधित	7.9	4.1	6.8	5.5	2.4	4.6	4.7	8.1	5.3
लोक प्रशासन, रक्षा और अनिवार्य सामाजिक सुरक्षा	7.9	3.1	6.6	5.0	3.0	4.4	2.9	0.0	2.4
शिक्षा का क्षेत्र	3.6	11.1	5.7	2.6	14.9	6.3	0.2	33.9	5.6
स्वास्थ्य और सामाजिक नेटवर्क	1.9	4.6	2.7	1.3	5.2	2.5	0.0	0.7	0.1
अन्य सामुदायिक, सामाजिक और व्यक्तिगत सेवा क्रियाएँ	2.6	3.2	2.8	2.2	5.1	3.1	1.4	9.2	2.7
नियोक्ता के रूप में निजी घरों की कार्यकलाप	1.2	8.2	3.1	2.3	18.0	6.9	5.3	22.7	8.1
कुल श्रमिक	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0

स्रोतः एनएसएसओ में यूनिट स्तर डेटा, भारत में प्रवासन, 64$^{वां}$ दौर, 2007-08

तालिका ए3: चतुर्थांश वर्गों द्वारा प्रवासियों की कार्य स्थिति

कार्य स्थिति	भारत					पश्चिम बंगाल					कोलकाता				
	प्रथम चतुर्थांश	दूसरा चतुर्थांश	तीसरा चतुर्थांश	चौथा चतुर्थांश	कुल	प्रथम चतुर्थांश	दूसरा चतुर्थांश	तीसरा चतुर्थांश	चौथा चतुर्थांश	कुल	प्रथम चतुर्थांश	दूसरा चतुर्थांश	तीसरा चतुर्थांश	चौथा चतुर्थांश	कुल
	पुरुष														
स्व नियोजित	41.4	35.7	31.9	28.4	32.3	55.1	37.5	31.6	29.4	37.0	48.5	33.0	30.5	26.5	32.3
नियमित वेतनभोगी	31.3	44.0	56.8	67.9	55.8	13.1	44.8	60.0	70.1	50.0	0.9	48.9	57.6	72.6	52.2
आकस्मिक मजदूरी	27.2	20.3	11.3	3.7	11.9	31.8	17.6	8.4	0.5	13.0	50.7	18.1	12.0	0.9	15.5
कुल श्रमिक	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0
	महिला														
स्व नियोजित	47.7	50.2	48.1	31.6	44.6	60.7	54.4	35.5	24.5	47.2	18.1	2.6	27.6	5.8	14.5
नियमित वेतनभोगी	18.2	25.5	38.7	65.3	35.5	27.9	32.4	48.5	72.1	42.0	81.9	97.4	43.4	94.2	73.9
आकस्मिक मजदूरों	34.1	24.3	13.2	3.1	19.9	11.4	13.2	16.0	3.4	10.8	0.0	0.0	29.0	0.0	11.7
कुल श्रमिक	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0

स्रोतः एनएसएसओ में यूनिट स्तर डेटा, भारत में प्रवासन, 64$^{वां}$ दौर, 2007-08

तालिका ए4: पूर्व और स्थानांतरण के बाद **कीअवधि में भागीदार कर्मचारियों की संख्या**

	पुरूष		महिला	
	पूर्व-प्रवास	स्थानांतरण के बाद	पूर्व-प्रवास	स्थानांतरण के बाद
श्रमिक	48.5	96.5	24.3	34.3
भाग लेने वाली शिक्षा	30.2	1.0	5.2	0.0
कार्य की तलाश	5.9	0.5	0.0	0.0
घरेलू कार्यों में भाग लेना	0.0	0.0	70.0	65.7
अन्य	15.3	2.0	0.4	0.0
कुल	100.0	100.0	100.0	100.0

स्रोतः जनवरी-जुलाई, 2010 के फील्ड वर्क के आधार पर